चैतन्य लहरी

1991

खंड 3 अंक - 6

हिन्दी आवृत्ति

सहजयोगी का पहला लक्षण ये है कि वो शान्त चित्त होता है । और अत्यन्त सक्त । किसी से डरता नही । उसका जीवन अत्यन्त शुद्ध होता है । उसका शरीर शुद्ध होता है, उसका मन शुद्ध होता है । और आत्मा के प्रकाश से वो सारी दुनियां में तेज फैलाता है । जो आदमी प्रेम नही कर सकता वो हमारे विचार से सहजयोगी बिल्कुल है ही नही ।"

- श्री माताजी निर्मला देवी ।

विषय सूची

			पृष्ठ संख्या
1.	शिव रात्री पूजा	9.2.91	1
2.	होली पूजा	28.2.91	7
3.	पहला तालकटोरा पब्लिक प्रोग्राम,दिल्ली	2.3.91	14
4.	दूसरा तालकटोरा पब्लिक प्रोग्राम,दिल्ली	3.3.91	23
5.	नोयडा पब्लिक प्रोग्राम	4.3.91	32
6.	जन्म दिवस पूजा	10.3.91	38

शिव रात्री पूजा

दिल्ली - 9.2.91

शिवजी के लिए कहा जाता है कि वे बहुत सरल हैं और एक दम भोले हैं । इसलिए उनको जानना बहुत कठिन है । कुण्डलिनी का कार्य ही देवी का कार्य है । देवी ही इस चराचर सृष्टि को बनाती है और अन्त में आपके अन्दर कुण्डलिनी बनकर शिव तक पहुंचा देती है । शिवका पूजन करते वक्त याद रखना चाहिए कि शिव के गुण - धर्म हमारे अन्दर विकसित हुए या नहीं । इसीलिए सब से पहले कुण्डलिनी की गति को समझ लेना चाहिए । जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो सर्व प्रथम वो आपके शरीर को स्वस्थ करती है । क्योंकि शरीर का भी स्वस्थ होना जरूरी है । इसलिए आपका चित्त पहले अपने शरीर पर जाता है । शुरूआत में सभी मुझे अपनी शारीरिक तकलीफों, बिमारियों के बारे में बताते हैं । कुछ हृष्ट - पुष्ट लोग अपनी सांसारिक तकलीफ बताते हैं । जब हम लोग जागृत अवस्था में होते हैं तो हमारा चित्त इन सब चीजों के तरफ आकर्षित रहता है और इससे हम लोग काफी तकलीफ में रहते हैं । जैसे - जैसे आप सहजयोग में आएंगे आप यही पायेंगे कि आप लोग अपने शरीर की, सांसारिक चीजों की, या मानसिक दुःखों की ही चर्चा करते हैं । इसलिए पहले ये व्यवस्था की गई थी कि शरीर की तरफ ध्यान ही नहीं देना चाहिए । उसको कष्ट देना चाहिए । गर आप पलंग पर सोते हैं तो नीचे उतर कर तख्त पर सोईये । फिर तख्त से आप चटाई पर सोइये । फिर आप जमीन पर सोइये । फिर आप पत्थर पर सोइये । फिर आप दल दल में सोइये । ऐसे अनेक तरह से शरीर को पक्का बनाया जाता था जिससे शरीर बाद में कोई तकलीफ न दे । शरीर का आराम किसी भी तरह से मान्य न था । जैसे एक रात जागरण में यदि तकलीफ हुई तो सात रात जागरण करो फिर तकलीफ हुई तो चौबीस रात जागरण करो । उसी प्रकार खाने पीने की लालसा को वश में करने के लिए लम्बे उपवास करवाए जाते थे ।

आपको जो चीज पसन्द न हो ऐसी चीज आपको खिलवायी जाती थी । यहां तक कि आप अन्न मत खाओ, सिर्फ फल खाओ फिर गर आपको कपड़ों का बहुत शौक है तो आप सादे कपड़े पहनो । फिर आप हलके कपड़े पहनो । फिर आप हिमालय पर जाओ और वहां पूरे कपड़े उतार कर ठंड में ठुठरो । इसी प्रकार किसी को नखरा हो कि मुझे अच्छा घर चाहिए । तो उसे जंगल में रहने के लिए या तीर्थ स्थान आने को कहा जाता था । कोई कांची का आदमी तीर्थ स्थान में जाएगा तो काशी जाएगा । और काशी का जाएगा तो तीर्थ स्थान में कांची जाएगा । रास्ते में उसको शेर खा जाएंगे । शेर ने छोड़ा तो सांप काट लेगा । सांप ने छोड़ा तो मगर खा जाएगा । और जब तक वो वहां पहुंचते तो हजार में से एक आध ही बच पाता । इस तरह से लोगों को छांटते - छांटते उनसे आत्म साक्षातकार की बात की जाती । सहजयोग में उलटा हिसाब किताब किया हुआ है । सहजयोग में न तो आपको घर छोड़ना है, न द्वार छोड़ना है न खाना पीना छोड़ना है, न ही वस्त्र का कोई बन्धन है आप जैसे हैं वैसे ही रहें । इसी अवस्था में आपकी कुण्डलिनी का जागरण हो जाएगा । परन्तु पहले तो एक हिरण का चर्म बिछा के उसपे बैठ के साधना करके फिर आपकी तपश्चर्या होती थी, उसके बाद कठिन उपवास रखने के बाद भी आपकी परीक्षा होती, आपको उल्टा टांगा जाता । कूंए में डाला

जाता, दो तीन बार देखा जाता कि किस हालत में आप हैं । उसके बाद अगर आप जिन्दा रह गए तब फिर कहीं जाकर के चर्चा होती ।

अब सहजयोग में उल्टा कारोबार है । पहले तो हमने ऊपर का शिखर बना दिया । खोल दिया उसे सहस्रार खोल दिया । सहस्रार खोलकर के कहा कि आप ही लोग अपने को ठीक करिये । लेकिन अब भी हम लोग समझ नहीं पाते । सहजयोग बहुत ही कठिन चीज़ है । जितनी सरल है उतनी ही कठिन है । शंकर जी जैसे क्योंकि हमारे अन्दर अनेक नाड़ियाँ हैं । और उन नाड़ियों को खोलने का एक ही तरीका है कि हमारा चित्त जो है वो इधर - उधर न उलझे । तो सहजयोग में ये तो कोई नहीं बताते कि तुम खाना पीना छोड़ दो । तुम उपवास करो और तुम जाके हिमालय की ठंड में बैठो । लेकिन क्या करना चाहिए जिससे हमारी प्रगति हो ? तो सबसे पहले हमें अपनी तरफ अन्तर - मन करके विचार करना चाहिए कि ये मैं क्या कर रहा हूं ? जैसे कि अब आप कहीं गए और आपने देखा कि आपको सोने की जगह नहीं मिली, तो फौरन आप शिकायत करना शुरू कर देंगे कि माँ हमें सोने कि जगह नहीं मिली । उस वक्त ये सोचना चाहिए कि मैं ऐसे क्यों कह रहा हूं ? क्योंकि मैं अपने शरीर के बारे में चिन्ता कर रहा हूं कि मुझे सोने की जगह नहीं मिली । मुझे ठीक से जगह नहीं मिली और मैं अपना चित्त इसी में डाले जा रहा हूं । अब उस वक्त हमें ये सोचना चाहिए कि अच्छा हुआ कि मुझे जगह नहीं मिली । अब सो जैसे सोना है । अब यहीं सो । अपने शरीर से कहिये । तू सहजयोगी है । यही सोना होगा । तुझे सोने के लिए अच्छी जगह क्यों चाहिए । दुनियां में कितने लोग हैं जो रास्ते पर सो जाते हैं । तू कौन बड़ा भारी हो गया कि तुझे सोने के लिए अच्छी जगह चाहिए ? और लोग तो खड़े - खड़े भी सो जाते हैं । तू खड़े - खड़े क्यों नहीं सोता ? और फिर सोना भी क्या जरूरी है । अपने को समझता क्या है तू ? ऐसे अपने शरीर से प्रश्न पूछना चाहिए । एक दम आफत आ जाएगी कोई एक बार खाना न खाए तो । गर एक दिन खाना न मिले तो बहुत अच्छा हो गया ऐसा सोचना चाहिए । ऐसे शरीर को धिक्कारना चाहिए । एक आजकल तो बहुत ही ज्यादा शरीर के चोचले निकल आए हैं । जैसे कि ये हमने कपड़ा पहना, तो उसका मैचिंग होना चाहिए । इस तरह की आधुनिक चीजें निकल आई हैं और उसके जो परिणाम हैं वो इतने ज्यादा कृत्रिम हैं कि हम लोगों को समझ नहीं आता है कि हम लोग इस कृत्रिमता के पूरी तरह से गुलाम हुए जा रहे हैं । इसका मतलब ये नहीं कि आप विक्षिप्त हो जाएं । इसका मतलब ये नहीं कि आप अजीब से कपड़े पहन कर घूमिए और इसका मतलब ये भी नहीं कि आप हिप्पी हो जाएं । समझ लीजीए कि किसी स्त्री को एक मैचिंग ब्लाऊज नहीं मिला तो उसको तो लगता है कि वो गई काम से । बिल्कुल खत्म । पहले जमाने में तो कोई मैचिंग पहनता ही नहीं था । अब यदि उसे मैचिंग स्वैटर नहीं मिला तो बस आगई आफत । कौन देखता है आपको कि क्या पहने है आप ? और आप ऐसी कौन सी विभूति हैं कि आपको देखने से किसी का आज्ञा चक्र खुल जाएगा ? या किसी का कोई अन्य चक्र खुल जाएगा ? उल्टे आपको देखने से तो कोई पकड़ ही जाएगा । एक बार कोई एक भी चीज़ शुरू हो जाए । जैसे विलायत में है कि आपके बाल बिल्कुल उलझे होने चाहिए । तो सब ऐसे बाल लेकर घूमते हैं । पर तुम सहजयोगी हो । तुम विशेष लोग हो, तुम ऐसे क्यों कर रहे हो ? मैं अपने शरीर का इतना आराम क्यों देखता हूं ? मैं तो एक विशेष हूं । विशेष का मतलब ये कि आपमें चित्त की जो ये चंचलता है उसे रोकना है । चित्त को लीन करना है चैतन्य में । पर चित्त अगर इधर - उधर जाता रहे तो वो चैतन्य में कैसे लीन होगा ?

आपके हृदय में जहाँ शिवजी का वास है वहां चार नाड़ियाँ हैं । उसमें से एक नाड़ी मूलाधार तक जाती है । और उससे आगे नर्क है । कुछ लोग यही कहते हैं कि इसमें क्या खराबी है ? लेकिन आप सहजयोगी हैं, आप नर्क काहे को जा रहे हैं ? अपनी ओर चित्त करके ध्यान देना चाहिए कि मुझमें ये वासना क्यों है जो मुझे नर्क की ओर ले जा रही है । मैं तो एक कदम ऊपर रखे हुए हूं और एक कदम कबर में रखे हूं । उसकी दूसरी नाड़ी हमें इच्छाओं के तरफ ले जाती है । इसलिए बुद्ध ने साफ़ - साफ कहा था कि इच्छा करना ही हमारी मृत्यु का कारण है । इच्छा हम में बिल्कुल खत्म हो जानी चाहिए । लेकिन वो खत्म नही होती । एक शुद्ध इच्छा मात्र रहनी चाहिए । वो कैसे हो ? शुद्ध इच्छा इस तरह हो सकती है कि आप सोचे मुझे इसकी इच्छा क्यों हो रही है ? इस इच्छा की ओर मैं क्यों दौड़ा जा रहा हूं ? ऐसी मैंने अनेक इच्छाएं की, उससे मुझे क्या फायदा हुआ । तो जो कुछ भी मिला है उसी में आनन्द पा लेना ही एक सहजयोगी का कर्तव्य है । किसी को इच्छा हुई कि मैं माँ के बिल्कुल सामने जाकर बैठूं या किसी की इच्छा होती है कि हम पहले वहां जाकर खड़े हो जाएं । ऐसी इच्छा क्यों हुई । क्योंकि अज्ञान में ये नही जाना कि माँ हर जगह है । कही जाने की जरूरत क्या है ? तो शुद्ध इच्छा की जब आप इच्छा रखें, तो जब कुण्डलिनी चढ़ती है तो ये जो इच्छा की नाड़ी नीचे की तरफ मुड़ी हुई है उसकी ऊर्ध्वगति हो जाती है । उसमें शुद्ध इच्छा भर जाती है । इच्छा मनुष्य करता है इस विचार से कि इस समय मुझे सुख मिलेगा, आनन्द मिलेगा । पर मिलता कुछ नही । तो इस इच्छा को आपको आनन्द में लीन कर देना है । क्योंकि शिव का तत्व जो है, आनन्द का तत्व है । उनका स्वभाव आनन्द है । इसलिए हर एक चीज़ में आनन्द खोजना चाहिए । तब किसी चीज की त्रुटि ही नही लगेगी । दोष देखना या हर एक चीज़ में, ये ऐसा होता तो अच्छा होता, बहुत लोगों को आदत है । वो जो आप सोच रहे हैं, ऐसा होना चाहिए, वो कार्यान्वित ही नही हो सकता । आपका कोई मतलब भी नही है उससे । जैसे कोई सिनेमा देखता है कि कोई पहाड़ी से गिरने वाला है । तो कहते हैं, अरे तुम पहाड़ी से गिर जाओगे । वो क्या तुम्हारी बात सुन सकता है ? उसी तरह से हर एक चीज का ठेका लेकर बैठते हैं । और इस तरह से अपने बुद्धि में भी पूरी तरह एक विचारों की श्रृंखला बना देते हैं । लेकिन जो कुछ आप देखते हैं वो देखना मात्र हो गया । एक कटाक्ष में भी निरीक्षण हो जाएगा । और चित्त सा आपके अन्दर बन जाएगा । लेकिन वो देखना नही होता । उसे निरंजन देखना कहते हैं । उसमें कोई रंजना नही होती । उसके प्रति कोई प्रतिक्रिया नही होती । तो निरंजन देखना भी शिव का ही तत्व है । शिव के स्थान पर भी पहुंच गए और उनके मूर्ति के दर्शन भी हो गए, किन्तु जब तक उनका प्रकाश हमारे अन्दर नही आया तो सब व्यर्थ ही है ।

अब जो तीसरी नाड़ी है उसमें प्रेम उभरता है । मेरा बेटा, मेरी बहन, मेरा भाई, मेरा बाप, मेरा पति सब दुनियां भर की रिश्तेदारी । इसमें भी बहुत लोग उलझे रहते हैं । सहजयोग में भी, सालों तक वो छूटता ही नही । वही बातें । अब यह कहना कि ये रिश्तेदारी व्यर्थ है, तो यह बात ठीक नही । ऐसा ममत्व कि अपने बच्चों के लिए आप किसी का खून भी कर दें । कुछ भी कर सकते हैं इस ममत्व के लिए । पत्नी के लिए पति के लिए, इस कदर उसमें आदमी अपने जीवन को व्यर्थ करता है । और उसके बाद देखते हैं कि जिनके लिए इतना किया वो ही आपके दुश्मन हैं । वोही आपको सता रहे हैं । सब से ज्यादा दुःख वोही दे रहे हैं और आपको और भी ज्यादा दुःख इसलिए होता है कि इन्ही के लिए हमने इतना किया और इन्होंने हमारे लिए क्या किया ? पहले जमाने में कहते थे कि सबको त्याग दो । घर त्यागो, बच्चे त्यागो बीबी त्यागो,

सब छोड़ के जंगल में जाकर एकान्त वास करो । सहज योग में ऐसा नहीं है । सहज योग में किसी को नहीं त्यागना है । सबको अपनाना है । क्योंकि सहज योग एक व्यक्तिगत कार्य नहीं कि आप जाके एकान्त में बैठ गए और तपस्या की और बड़े ऊँचे हो गए । तो क्या फायदा हुआ । आप अवधूत बन गए तो क्या फायदा हुआ । एक ऐसा आदमी हो जो अच्छा भाषण दे सकता है । हो सकता है कि थोड़ी बहुत चैतन्य की भी वर्षा कर सकता है । पर उससे सारा संसार तो ठीक नहीं हो सकता । हमें तो सारे संसार को ठीक करना है । इसलिए ये सोचना कि मैं क्यों अपनापन सिर्फ थोड़े ही सीमित लोगों में रखता हूं ? एक पेड़ में गर पानी छोड़िये तो उसका जो सत्व पेड़ के हर शाखा में, हर पत्ते में, हर फूल में, हर फल में जाता है । और लौट आता है और नहीं लौटे तो वो उड़ जाता है । लेकिन गर वो एक फूल में ही फंस जाए तो वो पेड़ भी मर जाएगा और फूल भी मर जाएगा । देवी निर्वाज्य प्रेम करती हैं । देवी जब किसी के लिए कुछ करती हैं तो फिर उन्हें ये नहीं ख्याल रहता कि ये कुछ किया या हुआ, और उसने ऐसे क्यों किया, नहीं करना चाहिए था । उनका मन किसी भी चीज में उलझता नहीं क्योंकि वो करूणामय है । करूणा के सागर में लीन हो गया । कई लोग छोटी - छोटी परेशानियां बताते है । हालांकि मैं जानती हूं कि परेशानी में कोई अर्थ नहीं लेकिन उसे बहुत गंभीरता से सुनती हूं । उनके दायरे में मैं नहीं उतर पाती । अगर वो मेरे दायरे में नहीं उतर पा रहे हैं तो ये उनका दोष है । उनको उतरना चाहिए । इस करूणा में उतरना चाहिए । करूणा, करूणा के लिए होती है । किसी काम, मतलब या रिश्ते के लिए नहीं, करूणा को धनी या भिखारी में कोई भेद नहीं । जैसे समुद्र, कहीं भी गड्ढा हो जाए, वो पानी भर देगा । कहीं भी कोई त्रुटी हो, भर देगा । करूणा तो "स्वभाव" है स्व - माने आत्मा । आत्मा का भाव । जब वो आत्मा का भाव आपके अन्दर आ जाए सिर्फ करूणा फिर ये सब चीज टुट जाएगी । कि दिल्ली रहने वाले, बम्बई रहने वाले, इत्यादि । कुछ याद नहीं रहता । उसका महत्व नहीं रहता । हर आदमी क्या है वो जरूर आपको याद रहेगा कि ये कौन है । इसको कौन सी तकलीफ है । एक दम देखते ही याद आ जाएगा । नजर आपकी कहाँ गई । नजर अगर ये ढूंढ रही है कि दिल्ली वाला कौन है, कलकत्ते वाला कौन है । गर ये नजर आपकी ढूंढ रही है कि ये करूणा कहाँ वही चली जा रही है । किसकी ओर खींच रही है मुझे । तो पता होगा कि दुःखी आदमी है । कोई साधक बहुत बड़ा साधक होता है । एक दम हृदय खिंच जाना चाहिए उस आदमी के तरफ । और ये करूणा आपको सुमति भी देती है और स्मृति भी देती है । क्योंकि जितनी निकटता करूणा से आती है, उतनी किसी भी रिश्ते से नहीं आती । ऐसी विशेष चीज है करूणा और इस करूणा में अपने को लीन कर लेना । इस ममत्व को लीन कर लेना । ये सहज योग में उन्नति का मार्ग है । क्योंकि मैंने कभी नहीं कहा कि आप अपने बाल बच्चे छोड़ दो, घर छोड़ दो । ये सहजयोग है । आप जैसे भी हों जहाँ भी हों, अन्दर ही अन्दर बढ़ते जाओ । वो अन्दर देखे बगैर तो यह नहीं होगा । तो फिर ये सोचना है कि क्या मैं करूणामय हूं ? किसी को गर कुछ है और उसे ये कहा इस बार नहीं । नहीं हो सकता । बहुत बुरा मान जाते हैं । माने सारा ममत्व अपने ही बारे में हो । मुझे क्या मिलना है । मैं क्या पाऊँगा । मुझे क्या लाभ होगा । लेकिन ममत्व बाहर नहीं । कौन, किस दशा में, कैसा भी हो करूणा अपना रास्ता खुद ही ढूंढ लेती है बड़ी सुन्दरता से । और बड़ा आनन्द-दायी है । करूणा का पाना, उसमें बहना और करूणा में अनेक तरह के कार्य होना, आनन्द-दायी तो है लेकिन उस आनन्द में लोभ नहीं होता कि ये आनन्द मैं बार - बार पाऊँ । उसकी प्रतीति (चेतना) नहीं होती । कर दिया, कर दिया । हो गया, हो गया । जैसे संगीत को सुन लिया, मजा आ गया, वही खत्म हो गया । उसी तरह से कोई काम है, कर दिया ।

अब हृदय में चौथा जो हमारे अन्दर नाड़ी है वो अत्यन्त महत्वपूर्ण है वो चौथी नाड़ी कुण्डलिनी के जागरण से ही जागृत होती है और बाईं विशुद्धि से निकल के और मस्तिष्क में जाकर के कमल को खिलाती है । जब हमारा चित्त इन सब चीजों में लीन हो जाता है तो इस कमल में जीव आ जाता है, इसमें शक्ति आ जाती है या ऐसा समझ लीजिए जैसे किसी पौधे में पानी पड़ जाए तो वो जैसे अपने आप बढ़ता है इसी प्रकार ऐसा शुद्ध चित्त जिस मनुष्य का हो जाता है उसके हृदय की कली खिलती है और वो कमल रूप होकर के सहस्रार में छा जाता है । फिर उसका सौरभ, उसका सुगन्ध चारों ओर फैलता है । ऐसा मनुष्य एकदम नतमस्तक हो जाता है एक दम नतमस्तक होकर के सबके सामने झुका रहता है । कोई अगर कहता है कि आपने बड़ा मेरा काम कर दिया, बड़ा चमत्कार कर दिया तो वो चीज उसे छूती नही । जैसे कि आनन्द की लहरें बाहर की ओर तट पे जाकर के नाद करती हैं । किन्तु वापस नहीं लौटती । उसी प्रकार जिस मनुष्य की ये स्थिति हो जाती है उसका सारा कार्य बाहर को नाद करता है । आवाज करता है । उसका असर बाहर दिखाई देता है । तट पर । उसके अन्दर उसका कोई असर नही आता । ध्यान भी नही आता । विचार भी नहीं आता । जो भी आपके निनाद हैं वो और दूसरे तट पे जाकर छू जाएंगे । मेरे तक छूते ही नही मुझे आते ही नही । उससे हो सकता है, अन्दर बैठे देवी देवताएं खुश हो जाएं और वो चैतन्य को बहायें । या कुछ करें । पर जहां तक मेरा सवाल है मुझे कुछ उसका आभास भी कभी नहीं होता कि आप मेरी जय जयकार गा रहे हैं । मैं शायद वहां होती ही नही ।

जब आप स्तुति गाते हैं, खुश होते हैं, आपके अन्दर के देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं और आपके लिए अनन्त नाड़ियों से कितने तेज पुंज जैसे, प्रकाश के किरण आपके अन्दर छोड़ते हैं । कितनी मेहनत करते हैं आपके लिए । तो आपके लिए भी बहुत आवश्यक है कि वो जब हमारे लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं तो हमें भी इस शुद्धता को पाना चाहिए । तो पहले जिस शरीर को हम धिक्कार रहे हैं, मान नही रहे, वोही शरीर एक यज्ञ हो जाता है । यज्ञ माने कि जब हमारा शरीर है, हो रही है तकलीफ, तो इसको तकलीफ होनी ही है, क्योंकि ये यज्ञ है न । अच्छी बात है । जैसे की काष्ठ का जलना यज्ञ में जरूरी है, उसी तरह इस शरीर का जलना भी यज्ञ में जरूरी है । लेकिन सहजयोग में सबसे बड़ी बात ये है कि ये जो कृत युग शुरू हो गया है, आपके पर्व पुण्य से, आपको बहुत तकलीफ तो कुछ होती ही नही । सब चीज सामने आके खड़ी हो जाती है । साक्षात्कार होते रहता है । आप कहते हैं चमत्कार हो रहा है । सब चीज आपको सुलभ में मिल जानी है । बहुत से काम आपके सरल - सहज हो जाते हैं शोभना - सुलभा गति । आपके शोभा व मान जीवन में अत्यन्त सुलभता से आप इसे प्राप्त कर सकते हैं । कोई भी अशोभनीय काम करने की जरूरत नही । या ये एक तरह की बड़ी सूक्ष्म माया भी है उसमें ये नही सोचना चाहिए कि ये सारे चमत्कार हमारे लिए इसलिए हो रहे हैं क्योंकि हम कोई बड़े भारी सहजयोगी हैं । ये सोचना चाहिए कि ये चमत्कार इसलिए हो रहे हैं कि हमारे अन्दर विश्वास - परमात्मा के प्रति, शिव के प्रति, और कुण्डलिनी के प्रति दृढ़ हो जाएं । इसलिए चमत्कार हो रहे हैं । और इसको दृढ़ता से करने का कार्य यही है कि हम अपने चित्त को शुद्ध करें क्योंकि शिव चित्त स्वरूप हैं । उनके चित्त की शक्ति को चित्ती कहते हैं । वो चित्त हैं । माने कि जो चैतन्य आप जानते हैं, उस चैतन्य का जो चित्त है, वो शिव का प्रसाद है । वो शिव का तत्व है । माने सारे संसार में उनका चित्त फैला हुआ है । और जब आप कहते हैं कि चमत्कार हो गया, ये चीज घटित हो गई तब ये जान लेना चाहिए कि ये जो चित्त है जिसे हम चित्ती कहते हैं, उसने ये कार्य किया है । अणु रेणु हर चीज में उनका चित्त है लेकिन चित्त का मतलब ये होता है कि वो साक्षी हैं । देख रहे हैं ।

और कार्यान्वित जो है वो ब्रह्म-चैतन्य है । लेकिन जैसे कि संगीतकार गायक को देखकर के बजाता है, उसी प्रकार ब्रह्म - चैतन्य उस चित्त की दृष्टि को देखकर के ही कार्यान्वित होता है । उस चित्ती को ब्रह्म - चैतन्य जानता है और वो इस कार्य को तब करता है जब उस चित्ती को देखकर वो ठीक समझता है । ब्रह्म - चैतन्य देवी की शक्ति है, और वो कार्यान्वित है, उस देखने वाले को जानती है और उस शक्ति की पूरा समय यही लीला है कि उस एक देखने वाले को खुश रखना है । इसलिए कभी - कभी आप कहते हैं कि मां ऐसे गड़बड़ क्यों हो गया । इसलिए हो गया कि वो जो चित्ती थी उसका रुख बदल गया था । गर आप आज शिव की पूजा कर रहे हैं तो ये मैंने जो चार नाड़ियां बताई हैं उसकी ओर नजर करें । और जिस तरह से मैंने आपसे बताया है कि अपने को किस तरह से चित्त को इन चार चीजों में लीन कर लेना चाहिए यह कोई बड़ी गहन बात नही है, लेकिन सूक्ष्म है । और फिर आप मुझे बताइयेगा कि इस तरह से अन्तर - मन करके जो आपने अपने साथ विचारणा की, या तपस्या की है, या जो वार्तालाप किया है, और जो अपने चित्त को शुद्ध किया है, उससे आप एक दम शिव के सागर में पूरी तरह से डूब गये हैं । ऐसी दशा आप सब की हो, यही मेरी एक शुद्ध इच्छा है ।

--

होली समारोह - 28.2.1991

दिल्ली

श्री माताजी निर्मला देवी का भाषण

आप तो इतिहास को जानते हैं और पौराणिक बात भी जानते हैं कि होलिका जलाने से ही होली जलाई । इस समय तक किसानों का भी सब काम खत्म हो गया और ये सोचकर कि फसल वगैरह को बेच करके आराम से सब बैठे हैं तो थोड़ा सा उसका आनन्द भोगना चाहिए । होली की शुरूआत उसी महूरत में बिठाई हुई बात है । यह काम श्री कृष्ण ने किया, क्योंकि श्री राम जब संसार में आए तो श्री राम ने मर्यादाएं बांधी, स्वयं अपने जीवन से, अपने तौर तरीकों से, अपने आदर्शों से, अपने व्यवहार से, कि मनुष्य जो है मर्यादा - पुरूषोत्तम है । ये जो मर्यादा - पुरूषोत्तम, ये एक चरित्र, एक महान आदर्श हम लोगों के सामने रखा गया कि जो राजा है वो हितकारी होना चाहिए । जिसे सुक्रांत ने बिनेवॅलैन्ट किंग - हितकारी राजा कहा है, वो आदर्श स्वरूप श्री राम इस संसार में आए । और इतना बड़ा आदर्श उन्होंने सबके सामने रखा कि लोगों के हित के लिए, जनता के लिए उन्होंने अपनी पत्नी तक का त्याग कर दिया । हालाँकि उनकी पत्नी साक्षात् महालक्ष्मी थी, वो जानते थे कि उन्हें कुछ नही हो सकता, तो भी लोकाचार में दुनियां के सामने उन्होंने अपनी पत्नी को त्यागा जिससे लोकमत हमारे प्रति विक्षुब्ध न हों और लोकमत का मान रहे । अब वर्तमान में हम देखते हैं कि हमारे यहां लोकमत का जरा भी विचार नही किया जाता । लोग बिल्कुल निर्लज्जता से राज्य करते हैं, और उसके प्रति ध्यान नही देते । उसके वजह ये है कि मर्यादा - पुरूषोत्तम के बारे में लोग जानते नही या जानते हैं तो उसे समझते नही, और समझते हैं तो उसे अपनाते नही । ये कितनी आवश्यक बात है कि जो राज्य करते हों वो अपनी मर्यादाओं में रहें । अपने को मर्यादाओं से बाँधे । और तभी सारा संसार उन मर्यादाओं में बाँधा जाएगा । लेकिन राज्य करते हैं बिना किसी मर्यादाओं या आदर्शों के, या किसी विशेष तरह के प्रणालिओं के बगैर । इस तरह समाज तो घातक होगा ही, पर सबसे ज्यादा जो विश्व बन्धुत्व है वो सारा ही नष्ट हो जाएगा । आज मनुष्य अपने देश में भी बहुत संकीर्ण होता जा रहा है क्योंकि हमने अपनी मर्यादाएं जो बाँधनी थी वो नही बाँधी । जैसे कि बम्बई वाले हैं और दिल्ली वाले हैं । फिर बम्बई शहर वाले हो गए । फिर पुरानी दिल्ली वाले हो गए, फिर नोयडा वाले हो गए । इस तरह कि हम अपनी सीमाएँ बांधते जा रहे हैं । विश्व - बन्धुत्व में उतर कर भी जहां हम विश्व के एक नागरिक हो गए हैं, तब भी हम इस तरह कि छोटी - छोटी संकीर्णताओं में बन्धे हुए हैं । और जो मर्यादाएं हमें अपने व्यक्तित्व में बाँधनी चाहिए, वो हमने नही बाँधी । जो श्री राम ने बाँधी थी । क्योंकि श्री राम विश्व के लिए एक आदर्श राजा के रूप में आए थे । उनका स्वयं का जीवन एक आदर्श और मर्यादाओं से बंधा हुआ था । तो जिन मर्यादाओं को हमने बाँध रखा है उनसे तो हम क्षुद्र हो जाएँगे, छोटे हो जाएँगे, संकीर्ण हो जाएँगे । पर जो मर्यादाएँ श्री राम ने अपने चारों तरफ बाँधी हुई थी, उससे हम सबल हो जाएँगे । जैसे कि एक हवाई जहाज है और

उसके अन्दर के पैच वगैरह ठीक से न बाँधे जाएँ, वो अगर ठीक से न जोड़े जाएं या वो कार्यान्वित न हो तो जब ये हवाई जहाज उड़ेगा तो उसकी सब शक्ति नष्ट हो जाएगी । जो मर्यादाएं हमारी शक्ति को नष्ट करती है वो तो हम बहुत आसानी से बांध लेते हैं किन्तु जो मर्यादाएं हमारे शक्ति को बढ़ाती है, हमारा हित करती है, इतना ही नही हमें एक प्रभुत्व देती है । एक अस्तित्व देती है, एक बड़प्पन देती है उनको हम नही मानते । यही एक बड़ा दोष हमारी सूझ - बूझ का और विचार का है । बिना इन मर्यादाओं को समझे, कर्म काण्ड आदि में फंस कर, एक दूसरे से अलग हट कर जब हम इस तरह संकीर्ण बनते जा रहे है तो हमें चाहिए कि हम अपनी ओर थोड़ा विचार करें कि हमने कौन सी मर्यादाएँ बाँध रखी हैं, और कौन सी मर्यादाओं में हम बंधते चले जा रहे हैं ? जो मर्यादाएं हमें बँधनी चाहिए थी बिल्कुल बाँधी ही नहीं । उसकी वजह से हमारा सारा सामाजिक जीवन, राजकीय जीवन, और विश्व - बन्धुत्व की भावनाएँ, सब एक दम अस्त व्यस्त हो गईं, ढीली पड़ गई । जो मर्यादाएं श्री राम ने बांधी थी सूझ - बूझ बिना उसी तरह कि मर्यादाएं लोग भी बांधने लग गए । और इस तरह वे कर्म काण्डों में जाने लग गए । धर्म मानो कोई ऐसी चीज हो जिसमें आप हंस भी नही सकते, बोल भी नही सकते । आप उपवास और तपास करिये, एकान्त में रहिए । इस तरह के उस वक्त के ब्राह्मणाचार थे । पंडितों ने इस तरह की गलत चीजें बता दी कि यही धर्म है ।

लोगों की इस तरह कि धारणाएं तोड़ने के लिए श्री कृष्ण ने जन्म लिया । वे साक्षात श्री राम थे । उन्होंने लीलाएं रची, और सारे संसार में लीला का प्रचार किया । जन की गहराई को किस तरह से छूना चाहिए । इसमें भी श्री कृष्ण ने खेल रचा । श्री कृष्ण की जो लीला थी वो और तरह की थी और श्री राम का जो जनता की ओर त्याग था वो और था, आप जानते हैं कि विशुद्धि चक्र पर जनः सामूहिक हो जाता है । और नाभी चक्र पे धारणा हो जाती है । विशुद्धि चक्र पे आप सामूहिकता पर आ जाते हैं । सामूहिकता में भी किस तरह से श्री कृष्ण ने लीला से ही लोगों को जागृत करने का प्रयत्न किया । जब छोटे थे, पांच साल की उम्र के थे तो उन्होंने औरतें जो नहा रही थी, उनके कपड़े छिपा लिए । चार पांच साल की उम्र के बच्चों को क्या समझ है । आजकल के बच्चे जरा ज्यादा ही होशियार हैं, उस जमाने में तो 20 साल तक भी लड़कों को कोई अक्ल नही होती थी । इस तरह से बड़ी अबोधिता में उन्होंने औरतों के कपड़े छुपा लिए । और ये लोग जब जमुना में नहाती थी, इनमें राधा जी तो साक्षात महालक्ष्मी थी, महालक्ष्मी से ही उत्थान होता है, महालक्ष्मी तत्व से ही आप लोगों ने सहज योग में सभी कुछ प्राप्त किया है । तो उनके पीठ पर देखते कि किस तरह इनकी जागृती हो जाए । दृष्टि उनकी पीठ पर रखते थे । फिर जो औरतें घड़ा लेकर चलती थी, उनके घड़े पीछे से तोड़ते थे ताकि जमुना जी का चैतन्यित जल उनकी पीठ पर गिर जाए और इनकी जागृती हो जाय । उसके बाद रास । रा-माने शक्ति स-माने सहित, जैसे सहज है । तो रास खेलते थे हाथ पकड़ के । रा-धा माने शक्ति की धारणा करने वाली । श्री कृष्ण सबको नचाते थे और रास में नाचकर के वो राधा जी की शक्ति सब में संचारित करते थे । मुरली बजाते थे । मुरली भी एक तरह से कुण्डलिनी ही है । कुण्डलिनी के छः चक्रों की तरह बांसुरी में भी छः छेद होते हैं । उस नृत्य के द्वारा राधा जी की शक्ति सबके हाथों में से बहाते थे । इस प्रकार उन्होंने लीला रचाई । बाद में होली का भी उन्होंने एक बड़ा सुन्दर तरीका ढूंढ निकाला ।

पानी के अन्दर, बहुत संजो करके, पवित्रता पूर्वक सुगन्धित रंग मिलाकर, चैतन्यित पानी सबके बदन पर फेंकते जिससे कि सबका अंग - प्रत्यंग चैतन्यित हो जाए । ये उनका विचार था, खेल था । ये नही कि आप लोगों पे ऐसे - ऐसे चीज फेंके जिससे सुना है एक के प्राण चले गए । उनके मुंह पे गुब्बारा मारा गया । कितने शर्म की बात है । किसी अवतरण द्वारा बनाई गई सुन्दर विधि का क्या इस तरह से कबाड़ा करना चाहिए ? ये सिर्फ इन्सान से ही हो सकता है । जानवर भी नही कर सकते । रंग खेलते - खेलते, रंग खत्म हो गया तो कीचड़ उठा लिया, फिर गोबर उठा लिया, फिर उसके बाद तार कोल उठा लिया । अरे, किस चीज के लिए होली हो रही है ? उसका तत्व ही खत्म कर देना, और उसके साथ जो सुन्दरता है उसे भी। चैतन्यित जल फेंका जाय जिससे हमारे आपसी प्रेम को बढ़ावा मिले, और उससे भी बढ़ के आपसी मेल हो जाए , हमारे अन्दर जो भी दुष्ट भावनाएं हैं वो खत्म हो जाएं । बहुत ही एक तरह से स्वच्छन्द होकर के तन्मय होकर के एक साथ होली खेलें । उसमें कोई पाप की भावना नही होनी चाहिए, कोई हृदय में खराबी नहीं होनी चाहिए । इस तरह से ये इतनी सुन्दर चीज बनाई थी । इसी चीज का जो विपर्याय (उलट) जो हम देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है । जैसे आजकल गणपति की आराधना होती है वहाँ गन्दे - गन्दे सिनेमा के गाने, शराब पीकर के उनके सामने चीखना । गुजरात में आजकल रास बहुत चलता है, नवरात्री में तो शराब पीकर सब लोग आते हैं । औरतें और आदमी, शराब पीकर, बढ़िया - बढ़िया कपड़े पहन कर और क्या वहां शुरू हो जाता है ? एक बार लन्दन में देखा रास लीला में औरतें, मर्द लड़के, लडकियाँ सब शराब पीकर के इतने अश्लील तरीके से व्यवहार कर रहे थे कि वहाँ तो सब भूत ही नाच रहे थे। उसके दूसरे दिन पेपर में आ गया कि इनके यहाँ रास होती है वो ऐसी है और उसमें ऐसा होता है । पाश्चिमात्य लोग जहाँ पर, जिस काम को करने में लज्जित हो जाएं, (वो तो नैतिकता में अपने से बहुत ही कम है) ऐसे हिन्दुस्तानी करते हैं रास । ये बहुत शर्म कि बात है । क्या ये हिन्दुस्तानी यहाँ आकर के प्रदर्शन कर रहें हैं । दूसरे दिन पेपर में आया कि रास अनैतिकता का एक बहाना है । जो मर्यादाएं नैतिकता, प्रेम, आदर की है उन्हें छोड़कर के आप होली खेलेंगे । होली के बहाने अपने में छिपी हुई जो गन्दगियां हैं उसे आप निकाल रहे हैं । उसकी शोभा ही खत्म हो गई । अशोभनीय काम में मजा आ ही नही सकता । खास कर सहजयोगियों को तो आना ही नही चाहिए । सब कुछ शोभनीय होना चाहिए । रास भी ताल बद्ध स्वर बद्ध होता है । रास ये नही कि डमाडम बजा रहे हैं और एक दूसरे पे गिरा जा रहा है । इसमें शुद्ध चित्त होना चाहिए । इसलिए रास होता है । क्योंकि नृत्य करते वक्त मनुष्य का ध्यान नृत्य के लय और सुर पे होता है इसलिए उसका चित्त शुद्ध हो जाता है । ये होली का त्योहार जो श्री कृष्ण ने, लीलाधर ने, बनाया उसकी विशेषता ही यही थी कि मनुष्य इसे एक लीला समझे । सारा संसार एक लीला है और सहजयोग में आप लोग आकर लीलामय हो गए हैं । संगीत में और हर चीज में आप लोग तन्मय हो जाते हैं और आनन्द से उसका मजा उठाते हैं । आपस में इतने प्रेम से, बहुत शुद्ध भाव और बहुत नैतिकता से आप सारा काम बहुत सुन्दरता से करते हैं, इसमें कोई शक नही ।

लेकिन केवल लीलामय होना विशुद्धि पर रूक जाना होगा । विशुद्धि पे लीलामय है और उससे आगे आज्ञा पर चलना है। जो आज्ञा का चक्र है ये तप है । तब आपको होलिका का जलना सोचना

चाहिए कि प्रहलाद के तप के कारण होलिका जली थी । तो हम भी उस तप में आगे बढ़े क्योंकि विशुद्धि तक तो हम आ गए । समझ लीजिए कि सब आपस में प्रेम से रहते हैं । कभी - कभी इसमें भी मुझे शक है । लेकिन विशुद्धि तक ठीक है । हम में सामाजिकता आ गई, आपसी प्रेम आ गया, सारे विश्व-बन्धुत्व में उतरे । अभी भी ऐसे लोग तो बहुत हैं ही जो बहुत गहरे उतर गए हैं लेकिन ऐसे भी बहुत लोग हैं कि जो अब भी अपनी छोटी - छोटी बातें सोचते रहते हैं कि मैं कौन जाति का हूं, और मैं कौन जगह का हूं और फिर ऐसा कैसे हो सकता है । विश्व - बन्धुत्व में तो आपकी जाति - पाति, देश - विदेश सब छूट जाता है । अगर आप आज अमेरिका में पैदा हुए होते तो आप अमेरिकन हो जाते । आप यहां पैदा हुए तो हिन्दुस्तानी हो गए । मेरा मतलब ये नहीं कि आप हिन्दुस्तानी पैदा हो गए तो आपका रिश्ता अमेरिकनों से नहीं है । अब आप सभी एक ही मां के बेटे बेटियां हैं । इसलिए विश्व - बन्धुत्व में उतरे हुए हैं । पहली तो बात सोचनी चाहिए कि हमने विशुद्धि भी लांघनी है या नहीं । जब हम होली खेल रहे हैं, तब हम मर्यादा में हैं या नहीं । अभी किसी ने पूछा था कि माँ क्या औरतों के साथ पुरूषों को होली खेलनी चाहिए या नहीं ? मैंने कहा कि सहज योग में नहीं । क्यूंकि भाई बहन में होली नहीं खेली जाती । क्योंकि श्री कृष्ण ने हमारी मर्यादाएं, जैसे भाभी और देवर । उनके बीच में एक तरह कि मर्यादाएं ही है । देखिए भाई बहन का रिश्ता कितना सुन्दर है, पूरी मर्यादाएं हैं, पूरा प्रेम है, लेकिन भाई बहन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नहीं बैठेंगे । अपने देश की जो विशेष चीज है वो हमारी संस्कृति है । भाई और बहन दोनों एक साथ कभी नहीं बैठेंगे । लेकिन प्रेम भाई बहन में बहुत ज्यादा होता है । अपने आप से । आपस में लड़ाई करेंगे, लेकिन उनकी बहन को कोई कुछ कह, तो वो खून खराबा कर देंगे । इस प्रेम की जो विलक्षण प्रकृति है, विशेष प्रकृति है भाई बहन में और वो निसर्ग से मिली है, कुदरती है । तो भाई बहन में नितान्त श्रद्धा है, लड़ाई झगड़ा भी करेंगे, तू , तू मैं, मैं भी हो जाए, पर अन्दर से बहुत ज्यादा प्रेम है । और अत्यन्त शुद्ध प्रेम है और इस शुद्ध प्रेम की होली हम नहीं खेल सकते कि कहीं हमारी बहन का हमारे हाथों अपमान न हो जाए । भाई बहन में बड़ा ही सुन्दर सा, गोपनीय, मर्यादित, बन्धा हुआ प्यार है और उसके संगोपन में, नैतिकता में, अतिशयता है । तो भाई - बहन में होली खेलना मना है ।

इस लीलामय जीवन से हमें अगर ऊपर उठना है, तो हमें आज्ञा पर उतरना जरूरी है क्यूंकि इस तरह के त्यौहार से जो आनन्द मिलता है, आपस में जो शुद्धता मिलती है, अच्छाई मिलती है, भाई चारा होता है, विश्व - बन्धुत्वता आती है उससे हम फैल से जाते हैं । गहराई को छूने के लिए जरूरी है कि तपस्विता आए । सहजयोग बहुत जल्दी फैलता है । फैलेगा बहुत जल्दी, लेकिन गहरे कितने उतरे है ? सो गहराई के लिए तपस्विता की जरूरत है । तप का मतलब ये नहीं कि बैठकर के आप उपवास करो, पर अपना चित्त अगर खाने पर है तो उसे हटाना है । मेरा चित्त कहां है ? इसको देखना ही तपस्विता है । क्योंकि चित्त से ही आप अपनी आज्ञा खराब करते हैं । कहां है मेरा चित्त ? मैं क्या सोच रहा हूं ? इस वक्त मैं क्या कर रहा हूं ? ये अपना चित्त अगर आप देखें, अन्तर मन को हमेशा अपने सामने रखे, तो आपका चित्त जो है वो आज्ञा में प्रकाशित हो जाएगा । यही तपस्या है कि अपने चित्त का निरोध, चित्त का अवलोकन, चित्त का विचार करें । हमेशा मेरा चित्त कहां गया ? इतना

विचलित चित्त है । मैं बात कर रही हूं और आपका चित्त कहां है ? सो चित्त की ओर नजर रखना । चित्त का निरोध जबरदस्ती नही, लेकिन अब आत्मा के प्रकाश में अपने चित्त को देखने से अपना चित्त जो है वो आलोकित हो जाता है । एकाग्र होकर के अपना चित्त देखना चाहिए । जैसे ये खम्बा है । इसमें सुन्दर से फूल लगे हैं अब हर कटाक्ष में इनका निरीक्षण हो जाता है । ये सारे मुझे याद हैं परा - चित्त सा बन गया है क्योंकि चित्त की एकाग्रता है । उसी से ये चित्त बनता है । उसी से आपकी स्मृति अच्छी हो जाती है । सब चीज पूरी तरह से आप जान सकते हैं । चित्त से ही सब चीज जानी जाती है । लेकिन चित्त अगर विचलित हो तो आप किसी भी चीज को गहराई से नही पकड़ सकते । हम देखते है, खासकर विलायत में, 20 साल के मनुष्य से पूछें तुम्हारा नाम क्या है तो वे काफी देर सोचने के बाद सवाल का जवाब दे सकते हैं जैसे कि उन्होंने ड्रग ले रखा हो । उनके मस्तिष्क का ये हाल असल में ड्रग से नही हुआ जितना चित्त से हुआ । चित्त इतना विचलित हो जाने से कुछ चीज याद ही नहीं रहती । शुद्ध चित्त जो होता है वो एकाग्र होता है । और एकाग्र चित्त वो ही चीज लेता है जो लेना है । जो नही लेना है उधर देखता ही नही । उसको दिखाई ही नहीं देता । अपने आप वहां से हट जाता है क्यूंकि वह इतना शुद्ध है कि वो मलिन हो ही नही सकता । सहज योग का तप सिर्फ ये है कि मेरा चित्त कहां रहा है । मेरा मन कहां जा रहा है । जब ये तप आपने कर लिया तो आज्ञा को आप लांघ गये । सहस्रार में तो कोई प्रश्न ही नही क्यूंकि हम बैठे हुए हैं । तो अगर आप आज्ञा को नही लांघेगे तो सहस्रार में हमें बड़ी मुश्किल हो जाती है । क्योंकि आज्ञा का चक्र बहुत ही ज्यादा संकीर्ण है, उससे खींच निकाला बड़ा कठिन है । तो आज्ञा के लिए जरूरी है कि तप करें और जैसे आप तप करना शुरू कर दें आप अपने आज्ञा को छू लेंगे । नही तो फिर सहज योग में एक साहब बता रहे थे कि एक सहजयोगिनी को कैन्सर हो गया । वो आती होगी प्रोग्राम वगैरह में लेकिन चित्त उनका इधर - उधर होगा । ऐसे कैसे हो गया । कैन्सर तो हो नहीं सकता । इसकी वजह ये कि प्रोग्राम में आये थे पर कुछ न कुछ अपनी विपदा सोचते रहे । बजाये इसके कि जो कहे जा रहे हैं उसे समझें, अपनी ही अन्दरूनी बात को ही सोच सोचकर आप चली गई उस बहकावे में । और उस बहकावे में आपको कैन्सर की बिमारी हो गई । हम मन से क्या सोच रहे हैं । मन में हमारे कौन से विचार आ रहे हैं । यही कि हम पे ये दुख है, वो दुख है, ये पहाड़ है । आपको जो आशीर्वाद मिले हैं उनका ध्यान कीजिए । सोचिये, अपने पे कितने आशीर्वाद हैं । दिल्ली शहर में करोड़ों लोग रहते हैं, कितनों को सहजयोग मिला है ? हम कोई विशेष व्यक्ति है । कोई ऐसे वैसे नही है कि अपने चित्त को बेकार करें । हमें सहज योग मिला है । इसकी धारणा होनी चाहिए अन्दर से । और उस अन्तर मन में उतरना चाहिए । उसी से झूठी मर्यादाएँ सब टूट जाएंगी । अगर आप नही तोड़ियेगा तो किसी न किसी तरह से ऐसे कुछ अनुभव आयेंगे कि अपने आप ये मर्यादाएं टूटती ही जाएंगी । जिस चीज को आप सोचेंगे ये हमारा अपना है । आप कहेंगे आप दिल्ली वाले हैं । एक दिन ऐसा आयेगा कि दिल्ली वाले आपको ठिकाने लगायेंगे । या आप नौयडा वाले हैं तो नौयडा वाले आपके पीछे बन्दूक लेके भागेंगे । तब आपकी समझ में आयेगा कि मैं क्यों कहता हूं मैं नौयडा वाला हूं । फिर न घर के न घाट के ये हालत आपकी हो सकती है । उसकी वजह ये कि आपका चित्त ही ऐसा है जो घर का न घाट का । जब तक इस गहराई में न उतरेंगे तब तक आप अपने को सहजयोगी कहें तो भी मैं मानती नही इस चीज को । क्योंकि

सहजयोगी का पहला लक्षण ये है कि वो शान्त चित्त होता है । और अत्यन्त सबल । किसी से डरता नही । उसका जीवन अत्यन्त शुद्ध होता है । उसका शरीर शुद्ध होता है, उसका मन शुद्ध होता है । और आत्मा के प्रकाश से वो सारी दुनियां में तेज फैलाता है । जो आदमी प्रेम नही कर सकता वो हमारे विचार से सहजयोगी बिल्कुल है ही नही । वो तो पहली सीढ़ी भी नही चढ़ा है । इस तरह से अगर आप समझें कि आज होली है । होली के दिन तो हम बहुत मजा उठायेंगे, कोई बात नही । श्री कृष्ण ने जब कह दिया, खेलो, कूदो, सब लीला है सब दुनियां लीला है । पर लीला के ऊपर जो मर्यादाएं हैं उनको पाने के लिए आज्ञा पर आपको तप करना होगा । जैसे आकाश में आप देखते हैं कि बहुत सी पतंगें चल रही हैं और कोई भी पतंग हाथ से छूट जाये तो न जाने वो कहां चली जाएगी । वो ही हाथ आत्मा है । तो अपने चित्त को अपनी आत्मा की ओर रखो । अपने को शुद्ध करते जाना ही सहजयोग में तपस रूप है । आपने आज हवन किया - ये तप है, क्योंकि अग्नि सब चीज को भस्म कर देती है । उसी तरह से, आपके तप से आपके अन्दर जो भी इस तरह के दुर्विचार हैं या गलत मर्यादाएं हैं वो सब टूट जाएंगी । आनन्द पाना आपका अधिकार है और आप आनन्द को पा सकते हैं और पाया है आपने आनन्द को, लेकिन आनन्द बांटने के लिए अपने अन्दर गहराई होनी चाहिए । अगर आप गंगा में एक छोटी सी कटोरी ले जाएं तो आप सिर्फ कटोरी भर पानी लेके आ सकते हैं, लेकिन जब आप एक गागर ले जाएं तो आप गागर भर के ला सकते हैं । लेकिन किसी तरह आप इन्तजाम कर लें कि पूरी तरह पानी बहता आए आपके तरफ तो आपके चारों तरफ गंगा ही बहते रहे । तो किस स्थिति में आप हैं उसे देखना चाहिए । क्या आप कटोरी भर पानी ही सहज योग से ले रहें हैं ? क्या आप अपने सीमित आनन्द में है ? क्या आप सबके आनन्द के लिए हैं ? और क्या आप स्वयं ही इसका स्रोत है ? तब आपके समझ में आ जाएगा कि होली मनाने के लिए भी गहराई चाहिए । और इस आनन्द का हमेशा उपभोग लेने के लिए भी गहराई चाहिए । इसलिए आज्ञा और विशुद्धि का बड़ा नजदीकी रिश्ता है । ये तो बाप बेटे का रिश्ता है । मुंह बनाए रखना बेकार की बातें करना । या बिल्कुल ही नही बोलना इस तरह दोनों तरीके से विशुद्धि खराब हो जाती है । लेकिन दूसरों को सुख देने के लिए अच्छी बात करना । दूसरों से प्रेम जोड़ने के लिए अच्छी बात करना । आपसी लड़ाई झगड़े मिटाने के लिए सुन्दरता से बात करना । इन सबसे विशुद्धि चक्र ठीक होते जाता है । और इस तरह से जब आपकी विशुद्धि ठीक हो जाती है तब फिर आप देखते हैं कि जब मैं किसी से बात करता हूं तो ऊपरी तरह से लोग खुश हो रहे हैं । अन्दरूनी तरीके से नही हो रहे । तब आपको ख्याल करना चाहिए कि मेरी गहराई अभी नही आई । एक छोटा सा फूल भी अगर कोई शुद्ध हृदय से दे तो उसका बहुत असर सहज योग में हो सकता है । तो जो पूरे हृदय से कोई कार्य करे । किसी से दोस्ती है । ऊपरी - ऊपरी नही रखो । अन्दरूनी रखो । जब तक विशुद्धि में आज्ञा की गहराई नही होगी तब तक आपकी विशुद्धि बहुत ही उथली रह जायेगी । आज्ञा की गहराई होना बहुत ही जरूरी है । गहराई न होने का मतलब यह कि विचार करके, उसको नाप - तोल करके आप हर चीज को करते हैं । अगर मैं पांच रूपये दूं तो मुझे सौ रूपये मिल जाएंगे । या ऐसे करना चाहिए तो ये हो जाएगा । नही । अन्दर से ही मुझे लग रहा है कि करना चाहिए । मुझे देना ही चाहिए । मैंने कुछ नही दिया अभी तक । दिखाने के लिए । या पेपर में छप जाए । आपने जो भी करना है हृदय से । जब ये स्थिति आपमें आ जाएगी । तब आप समझ लीजिए कि आपकी गहराई विशुद्धि पर काम कर रही है । और गहराई में जब आप विशुद्धि को प्राप्त करेंगे तब आपका

जन हित, जन संबंध और विश्व बन्धुत्व है । उससे पहले नही ।

सो आज इस होली के दिन हमें वो सब चीजें जला देनी चाहिए जिससे हमारा चित्त खराब होता है । जिससे हमारी आज्ञा खराब हो जाती है । तो दोनों चीज । ये चित्त भी साफ हो जाए और आनन्द और बोध में हम लोग होली मनाएं । जिस दिन इसका पूर्ण सामन्जस्य बन जाएगा, दानों चक्रों में एकरूपता आ जाएगी तो सहस्रार पे कोई प्रश्न नही खड़ा होगा । पर ये दोनों चक्र मड़बड़ करते हैं । विशुद्धि से ही निकल करके आप जानते हैं कि दोनों नाड़ियां ऊपर जाकर के और आज्ञा पर क्रॉस करती है । जब विशुद्धि की ओर आपका चित्त जाता है तो श्री कृष्ण की विशेषता - राधा जी की शक्ति (जो आह्लाद-दायनी है, आनन्द देने वाली है, उनको देखते ही लोगों को आनन्द आ जाता है, सो वो आह्लाद -दायिनी शक्ति जो फूलों में है, बच्चों में है) वो आपके अन्दर जागृत हो सकती है । लेकिन जब तक उसमें गहराई नही आएगी तब तक ये आह्लाद-दायिनी शक्ति ऊपरी, जबानी रह जाएगी । तो इन दोनों का मेल आपको सोच लेना चाहिए । हमारे अन्दर गहराई का आना बहुत जरूरी है और गहराई से किसी चीज का आनन्द देना भी बहुत जरूरी है ।

आप सबको अनन्त आर्शीवाद ।

-

तालकटोरा स्टेडियम पब्लिक प्रोग्राम

दिल्ली - 2.3.1991

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी का प्रवचन

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा नमस्कार । ' सत्य को खोजने की जो आवश्यकता हमारे अंदर पैदा हुई है, उसका क्या कारण है ? आप कहेंगे कि इस दुनियां में हमने अनेक कष्ट उठाए, तकलीफें उठाई । चारों तरफ हाहाकार दिखाई दे रहा है । कलयुग में मनुष्य भ्रांति में पड़ गया है, परेशान हो गया है । उसे समझ नहीं आता कि ऐसा क्यों हो रहा है । तब एक नए तरह के मानव की उत्पत्ति हुई है, एक सृजन हुआ है । उसे साधक कहते हैं । उसको विलियम ब्लेक ने 'मैन ऑफ गॉड' कहा है । आजकल तो परमात्मा की बात करना भी मुश्किल है फिर धर्म की चर्चा करना तो बहुत ही कठिन है क्योंकि परमात्मा की बात कोई करे तो लोग पहले उंगली उठा कर बताएंगे कि जो लोग बड़े परमात्मा को मानते हैं, मन्दिरों में, मस्जिदों में चर्चों में गुरुद्वारों में घूमते है, उन्होंने कौन से बड़े भारी उत्तम कार्य किए है ? आपस में लड़ाई, झगड़ा, तमाशे खड़े किए हैं । इन्होंने कौन-सी बड़ी शांति दिखाई है ? ये कौन - से सन्मार्ग से चलते हैं । किसी भी धर्म में कोई भी मनुष्य हो किसी भी धर्म का पालन करता है, परमात्मा को किसी तरह से भी मानता हो, लेकिन हर एक तरह का पाप वो कर सकता है । उस पर किसी भी तरह का बंधन नहीं, कोई रोक - टोक नहीं, फिर ऐसे धार्मिकता का क्या अभिप्राय: है ? ये धर्म किस काम को ? जब ऐसा हमारे सामने नजारा आ जाता है तो घबरा जाते हैं कि क्या बात है ? लेकिन, अगर आप इस चीज को एक वैज्ञानिक, तरीके से देखना चाहें और दिमाग खोलकर सोचें तो, आपको एक बात समझ में आ जाएगी कि धर्म के तत्व को किसी ने भी नहीं पकड़ा । और धीरे - धीरे सब उस धर्म से च्युत होते गए, हटते गए । सारे धर्मों में, जो इनके प्रणयता थे, जो अवतरण थे, जो महागुरु थे, उन्होंने एक बात कही थी कि पहले तुम अपने को खोज लो । काहे रे बन खोजने जाए, सदा निवासी, सदा अलेपा, तोहे संग समाए । कहे नानक, 'बिन आपाचीन्हें मिटे न भ्रम की काई'। सो नानक साहब ने कहा, अनादि काल से यही बात सबने कही । कुरान में भी लिखा हुआ है कि तुम्हें वली होना है, तुम्हें रूह को जानना है । कौनसा ऐसा शास्त्र है जिसमें ये लिखा नहीं है । ईसा ने कहा, 'जब तक तुम्हारा दूसरा जन्म नहीं होता है, तुम समझ नहीं पाओगे ।' कबीर ने कहा, 'कैसे समझाऊँ सब जग अंधा ।' अंधे को अगर आप बताना चाहें कि ये रंग कौन से हैं, तो वो समझ नहीं पाएगा । उसको बताने से फायदा नहीं । इस तरह की एक बड़ी समस्या समाज के सामने, अपने इस विश्व के सामने आज खड़ी है । इसका एक ही इलाज है कि आखें खुल जानी चाहिए आपकी । जब तक आँख आपकी नहीं खुलेगी, बेकार की बातें हो जाएगी, बात की बात रह जाएगी । बेकार की किताबें पढ़ - पढ़ करके आपस में लड़ते ही रहेंगे । इसका कोई इलाज होने ही नहीं । इसका इलाज है 'परिवर्तन ।' और इस

परिवर्तन के लिए कुछ न कुछ तो ऐसी विशेष व्यवस्था उस परमेश्वर ने जरूर करी होगी । क्या उसने हमें इस दुनियां में इसलिए भेजा है कि हम अपने जीवन को ऐसे भ्रांति में खो दें ? हमारे जीवन का कोई भी अर्थ न निकले ? कि हम अपना जीवन इस तरह से लड़ाई, झगड़ा घर - गृहस्थी, इधर - उधर की बातों में खत्म कर दें ? क्या हमारे जीवन का यही एक मूल्य है ? क्या इसका कोई और मूल्य नही ? इसकी कोई कीमत नही ? इसलिए क्या हम अमीबा से इंसान बने ? कोई न कोई तो विशेष काम होगा, जिससे परमात्मा ने हमें एक मानव का रूप दिया । और जब यह जागृति आपके अंदर आ गई कि, हमें सत्य को जानना है । अब मैं मानती हूं कि जैसे आपने कहा कि इसकी दुकानें खुल गई और दुकानों में चीज बिकने भी लग गई । पैसे वाले सोचते हैं वो भगवान को खरीद सकते हैं । हो सकता है, यह सब गड़बड़ियां हो गई और उसमें भी बहुत से लोग बहक गए । किन्तु, असत्य है तो सत्य होना ही चाहिए । और वो सत्य क्या है ? उसे जान लेना भी एक परम कर्त्तव्य है । उसके बाद सब धर्मों का अर्थ निकलेगा क्योंकि यही सबका सार तत्व है । उस तत्व को छोड़ने के कारण ही तो ये आज हमारे सामने अनेक तरह की रूकावटें आ गई । और हम धर्म की ओर मुड़ना नही चाहते । दूसरी बात ये भी है कि विज्ञान में धर्म की कोई चर्चा ही नही है । धर्म के बारे में कोई बोलता नही और आज सारा जमाना विज्ञान में ही चल रहा है । विज्ञान के सामने फिर हम झुक जाते हैं कि विज्ञान तो कोई धर्म की बात ही नही करता । लेकिन विज्ञान जिन वस्तुओं के बारे में कहता है, जिन तत्वों के बारे में बोलता है उन सब में उनके धर्म हैं, उनकी मर्यादाएं हैं । जो सोना है उसका एक धर्म है । वो धर्म नही बदल सकता विज्ञान कार्बन का भी एक धर्म है, पशु का भी एक धर्म है । पशु भी परमात्मा के पाश में है और जो जड़ वस्तुएँ हैं, जितने भी जड़ तत्व हैं, वो सब परमात्मा के पास में है । इसमे भी उसकी मर्यादा है । ऐसे ही मनुष्य में भी उसकी मर्यादा है । मनुष्य की दस मर्यादाएं हैं जो हमारे अंदर भवसागर में उसका वाक्तव्य है । आदिगुरू दत्तत्रेय से लेकर जो भी महान गुरू हो गए, जिन्होंने अनेक बार जन्म लिया, उन्होंने हमारे अंदर धर्म की मर्यादाएं बिठाई हैं । पर इस धर्म की जब तक जागृति नही होगी, जब तक हम उस धर्म के साथ एकाकारिता नही स्थापित कर लेते, तब तक धर्म केवल बाह्य काम हो जाता है । लोग कहते हैं, 'माँ हम इतनी पूजा - पाठ सब करते हैं पर अंदर कोई शांति ही नही ।' सो आप परमात्मा की बात कैसे कर रहे हैं ? हमने कहा कि अब परमात्मा का अनुभव लेने का समय आ गया है, इसे ले लीजिए । एक सर्वसाधारण बुद्धि से भी सोचिए कि सब चीजों के लिए आप पैसा कैसे दे सकते हैं ? कोई आपसे पैसा माँगता है तो आपको पूछना चाहिए कि इसका पैसा कैसे दे सकते हैं हम ? क्योंकि ये एक जीवंत क्रिया है । आप अमीबा से इंसान हुए तो कितना पैसा आपने दिया था ? और जब ये फूल धरती माता ने आपको दिए थे तब धरती माता को आपने कितने पैसे दिये थे ? अगर कोई जीवंत क्रिया है तो उसको आप पैसा कैसे दे सकते हैं ? धरती माता पैसा समझती है क्या ? जब ये बात आप समझ लें कि ये एक प्रक्रिया है जो निसर्ग से आपके पास है और जिसे आप निसर्ग से ही प्राप्त कर सकते हैं, ये हमेशा सहज माने स्वतः होती है । उसके लिए आपके अंदर ही सब कुछ बंधा हुआ है जैसे एक बीज में सारे पेड़, फल, पत्तियाँ और पुष्प जो कुछ बनने वाले हैं, एक छोटे से बीज में उसका सारा चित्र है । उसी तरह से आपके अंदर भी इसी तरह का पूरा एक चित्र बना हुआ

है । अब ये कहना कि साइंस में ये चीजें नही है तो सब चीज विज्ञान में है क्या ? विज्ञान में प्यार की कोई बात है ? बताएं कि माँ बच्चे से क्यों प्यार करती है ? मनुष्य अपने देश से क्यों प्रेम करता है ? बताएं । इसका कारण विज्ञान दे सकती है ? विज्ञान तो बहुत ही सीमित चीज है । जो आँखों के सामने दिखाई देता है, वही वो बता सकते हैं, और हजारों चीजें ऐसी है जो विज्ञान नहीं बता सकती । इतनी सीमित है । क्योंकि ये जो दृश्य हम देखते हैं उसी को जानने का एक तरीका है, वो विज्ञान से समझ सकते हैं । पर, कहां तक ? एक मिट्टी का कण भी तो हम नहीं बना सकते अपनी तरफ से । जो बना-बनाया है उसी को इधर - उधर से बदल दिया । कोई पेड़ टूट गया तो मकान बना दिया, और सोचने लगे वाह - वाह हमने क्या काम कर दिया । अरे । मरे से मरा बनाया । कौनसा काम किया तुमने ? जिंदा काम कर सकते हो ?

तो अहंकार इसी से आता है । जब मनुष्य सोचता है कि मैं ये करता हूं, वो करता हूं, मैंने ये किया, मैंने वो किया । विज्ञान ने जो किया वो देख ही लिया आपने । सद्दाम साहब का क्या हाल कर दिया, और आगे क्या होगा भगवान जाने । तो विज्ञान की सीमा को देखते हुए आपने जानना है कि इस विज्ञान से परे एक और विज्ञान है । यह विज्ञान परमेश्वरी विज्ञान है । उसे दैवी विज्ञान कह सकते हैं । लेकिन ऐसा कोई विज्ञान है, ऐसी कोई चीज् है, इस पर लोग अविश्वास करेंगे । लेकिन यह है, और इसके बारे में हजारों वर्षों से, इस भारतवर्ष में अनेक शास्त्रों में लिखा गया है । इतना ही नहीं, बारहवी शताब्दी में श्री ज्ञानेश्वर अपने गुरू से इसके विषय में लिखने की आज्ञा माँगी मुझे सर्वसाधारण मराठी भाषा में यह सत्य कहने की तो आप इजाजत दे दीजिए । इजाजत मिलने पर ज्ञानेश्वरी गीता में ये बात उन्होंने लिखी ज्ञानेश्वरी, जो कि गीता पर टिका है, उसके छठे अध्याय में उन्होंने साफ - साफ लिख दिया कुण्डलिनी के बारे में कि ऐसी आपके अंदर शक्ति है जो जागृत हो सकती है । साफ - साफ लिख दिया । लेकिन धर्ममार्तण्डों, धर्म के नाम पर पैसा बनाने वालों को क्योंकि कुण्डलिनी जगाना आता ही नहीं था इसलिए उन्होने ज्ञानेश्वरी के छठे अध्याय को बेकार कह कर निषिद्ध घोषित कर दिया । उसके बाद तुका राम, कबीर, रामदेव और नानक साहब ने यह बात, महाराष्ट्र, पंजाब, बिहार और हर जगह कुण्डलिनी के बारे में कहा । उन्होंने बताया कि कुण्डलिनी नाम की शक्ति हमारे अंदर स्थित है । जब ये कुण्डलिनी आपके अंदर जागृत हो जाती है तभी आप चारों तरफ फैली हुई इस परमात्मा की शक्ति, जिसे हम परम चैतन्य कहते हैं, उससे एकाकारित प्राप्त करते हैं । इसका संबंध (योग) इसके स्रोत से हो जाता है । जब तक आपका योग ही उससे नही होता, तब तक आपका कोई अर्थ ही नहीं लगता है । ये बात बाद में सबको कही गई, बताई गई । जनसाधारण तक, ये बात तब आई ।

आज तक जो कुछ हुआ है जो कुछ कहा गया है सहजयोग में वो प्रत्यक्ष में, अनुभव से कहा गया । इतना ही नहीं कि इसे आप प्राप्त करें, इतना ही नहीं कि जनसाधारण इसे प्राप्त करे, पर सहजयोगियों के पास ये भी शक्ति है कि वो और लोगों को भी दे सकें । ये होना ही था । ये जो बिजली आप देख रहे हैं पहले एक कहीं पर टिम - टिमाता हुआ एक बल्ब जला लिया था एडीसन ने,

और उसके बाद आज संसार जगमग है क्योंकि जो चीज इस संसार के उद्धार के लिए, इस संसार को उठाने के लिए है, इसको संपूर्णता में लाने के लिए बनाई गई है वो जरूर आनी ही है । इसलिए वो आई है ।

अब जब हम सत्य को खोज रहे हैं तब हमें जान लेना चाहिए कि सत्य क्या है ? सत्य की खोज क्या है ? संक्षिप्त में सत्य को जानना माने अपने आत्मा को जानना है । उसको जानते ही चारों तरफ फैली हुई परमात्मा की शक्ति को भी जानना है । अब जानना शब्द जो है, उस पर हम लोग गड़बड़ कर जाते हैं । जानने का मतलब बुद्धि से नही । बुद्धि से तो बहुत लोग जानते हैं । सुबह से शाम तक पाठ चलते रहते हैं । मैं आत्मा हूं, अहम् ब्रह्मस्मि । और फिर भ्रम में लड़ने भी लग जाते हैं । जानने का मतलब है अपनी नसों पर अपने केन्द्रीय स्नायु तंत्र पर आपको जानना है । इसी को बोध कहते हैं, विद् कहते हैं जिससे वेद हुआ । इसी 'न' शब्द से ज्ञान बना उसी से वली हुई, कश्यप हुए । हरेक धर्म में माने गए लोग होते हैं कि जो आत्म साक्षात्कारी हों । लेकिन एक - दो, एक - दो, ज्यादा नही । ये कार्य कलयुग में ही होना था । एक तरफ तो कलयुग का गहन अंधकार, अज्ञान और पहाड़ों जैसा अहंकार और ये पहाड़ों जैसा जो अहंकार है वो रोकता है इंसान को । इंसान कभी सोच भी नही सकता कि इस कलयुग में हम इस ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं । हम इस शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं । किसी से भी बात कीजिए जवाब मिलेगा हो ही नही सकता, आश्चर्य, असंभव लेकिन, जब हो सकता है तो क्यों न इसे प्राप्त करें ? और ये सहज ही है । सहज - 'सह' माने आपके साथ, 'ज' माने पैदा हुआ । ये योग आपका जन्म सिद्ध अधिकार है । सहज का दूसरा अर्थ होता है 'आसान' क्योंकि ये बहुत ही आवश्यक तत्व से भरी चीज है वो होना ही चाहिए । 'आसान' जैसे कि हमारा श्वास लेना बहुत जरूरी है तो वो आसान है । यदि श्वास लेने के लिए गुरू बनना और सब करना आवश्यक हो तो कितने लोग जीयेंगे । और ये गुरू बनाने का भी रिवाज बन गया है यहां पर । अरे भई । वो तो गुरू बने हैं, तुम कौन हो ? तुम तो अभी भी वही बने हो । तो फायदा क्या ऐसे गुरू को रखने से ? मानों पैसा भी नही लेते । ऐसे बहुत से गुरू हैं पैसे वैसे नही लेते, अच्छे हैं बिचारे । अच्छी बात है । पर तुमको कुछ बनाएंगे न तभी तो तुम ही क्यों न अपना गुरू बन जाओ ? बहुत आसान है सहजयोग में आप ही अपने गुरू हो जाते हैं । आप ही अपने को जान जाते हैं और सारा ज्ञान आप ही के सामने आ जाता है ।

कुण्डलिनी का जागरण के समय बहुत लोग कहते हैं कि बड़ी तकलीफ होती है, गर्मी होती है और परेशानी होती है । कुछ नही होता । क्योंकि कुण्डलिनी आपकी मां है, ये समझ लीजिए । ये आदि - शक्ति मां का ही आपके अंदर प्रतिबिम्ब है, ये आपकी अपनी - अपनी व्यक्तिगत मां है और ये हैं आपकी शुद्ध इच्छा की शक्ति । आपकी मां ने जब आपको जन्म दिया था तो आपको क्या तकलीफें दी बिचारी ने । सारी तकलीफें तो खुद ही उठाई । तो इस तरह की भी बातें बहुत से लोग करते हैं कि इसमें बड़ी तकलीफ होती है । शायद वो नही चाहते कि आप कुछ पा लें, या वो जानते ही नही और तीसरा यह हो सकता है कि वो गलत लोग हों, उनको कुछ मालूम ही न हो । तो हो सकता है वे

जागृति के कार्य की अनाधिकार चेष्टा करते हों । आज जो बात मैं आपके सामने रखना चाहती हूं वो ये है कि आप अपने को ये समझें कि हम मानव स्थिति में तो आए हैं लेकिन, इससे भी एक ऊँची स्थिति है, जिस स्थिति को हम आत्मसाक्षात्कारी कहते हैं । जिसको हम साक्षात्कारी मानव कहते हैं, जिसको द्विज (पुनः अवतरित) कहते हैं । ये एक वास्तविक स्थिति है । जब आत्म साक्षात्कारी आप हो जाते हैं तो उसके अधिकार, उसकी सारी शक्तियाँ आपको मिल जाती हैं क्योंकि ये सब निहित है, अंदर ही है, बंधा हुआ है तो मिलना ही हुआ । तो पहले से शंका मत करिए । पहली बात यह है कि, आपको जानना चाहिए कि क्रांति में, विकास में आप चरम शिखर पे हैं । जहां आप बैठे हैं वहां से साढ़े तीन फुट से ज्यादा आपको चलना नहीं । और ये कार्य घटित हो जाता है क्योंकि आप साधक हैं अनेक जन्मों के आपके पुण्य हैं और उन पुण्यों के फलस्वरूप ये आप सहज में प्राप्त कर लेते हैं । मेरा लेना - देना कोई नहीं बनता, ये भी समझ लीजिए क्योंकि एक अगर दीप है तैयार और दूसरा जला हुआ दीप है । अगर वो उसे छू ले तो ये दीप जल जाएगा । तो उस दीप का कौन सा बड़ा भारी उपकार हो गया ? क्योंकि ये दीप भी तो दूसरे दीप जला सकता है । इसी प्रकार सहजयोग में, जब आप इसे प्राप्त करते हैं तो आपकी शक्ति से ही आप अन्य लोगों को भी पार कर सकते हैं । इसी तरह से सहजयोग फैल रहा है । ऐसा कहते हैं कि 54 देशों में सहजयोग का कार्य चल रहा है । हालांकि, मैं सब देश में तो नहीं गई हूं लेकिन, कम से कम तीस देशों में मैंने देखा है कि सहजयोग बहुत जोरों से फैल गया है । "हम रूस गए थे । तो चौदह हजार, सोलह हजार से कम लोग नहीं आए । कभी हमें देखा नहीं था , जाना नहीं था । सिर्फ फोटो देखकर के वो लोग आए । उन्होंने सोचा कि कुछ न कुछ तो है इनकी शक्ल में । पता नहीं कैसे । मैं हैरान । और सबके - सब पार हो गए । मैं तो हैरान हो गई कि इन्होंने कभी भगवान का नाम नहीं सुना, कभी इन्होंने कोई धर्म की बात नहीं करी । ये लोग, कुछ भी नहीं जानते, बिचारे । ये कैसे पार हो गए ? परन्तु धर्म के नाम पर जो कुसंस्कार हम लोगों के बन गए हैं उनकी वजह से हम में कभी - कभी रुकावटें आ जाती हैं तथा मिथ्यावाद को हमें त्याग देना चाहिए । इससे धर्म बदनाम हो रहा है, हमारे ऋषि - मुनी बदनाम हो रहे हैं । रूस में, जहाँ पर कि लोगों ने कभी धर्म का नाम ही नहीं सुना । मैंने सोचा जैसे कोई एकदम साफ - सुथरी कोई चद्दर थी । "दास कबीर जतन से ओढ़ी" और एकदम से पार हो गए और गहरे उतरने लगे । बड़े आश्चर्य की बात है । और हम जो, सब उसके बारे में सुने हैं, जो सब जानते हैं, बड़े ज्ञानी लोग हैं हमारे ऐसे अगर कोई वाद - विवाद में खड़े हों तो आपको लगेगा कि समुद्र में ही कूद पड़ो । लेकिन, अंदर खोखले हैं बिल्कुल । ऊपरी तरह से जो हमने इतना कुछ जाना है और समझा है, इस चीज की वजह से हमारे अंदर जो असलियत है उतर नहीं पाती क्योंकि नकलियत को हमने असली मान लिया है । तो पहली चीज है कि इस तरह के कुसंस्कार हैं बहुत गलत हैं । वो आप समझ जाइएगा कि, ये गलत है । जैसे अभी एक साहब ने बताया कि "गुरुओं के चक्कर" । ये भी बहुत है । जो हमारे गुरु थे फलाने, उन्होंने हमको नाम दिया । अरे भई, नाम देने को गुरु काहे को चाहिए । गधा भी दे सकता है, नाम गुरु काहे को चाहिए ? मनुष्य को समझना चाहिए कि जो सत्य है, वो हमें पैसे से नहीं मिल सकता । सत्य को आप खरीद नहीं सकते । और सत्य जो भी हमें मिला है आज तक वो इन्सान होने के नाते हमारे मस्तिष्क में, हमारे केन्द्रीय स्नायु तंत्र पर यह हमारे शरीर में नसों की तरह से बह रहा है, उसी से जाना है । किसी के लेक्चरबाजी से

कुछ नही होता । ये अंदर की जागृति से ही होता है और जब इसकी जागृति हो जाती है तब मनुष्य समझता है कि मैं कितना गौरवशाली हूं । मैं कितना विशेष हूं । मेरी क्या व्यवस्था परमात्मा ने कर रखी है । और हर क्षण ऐसा लगता है कि किसी नई दुनियां में आप आनंद मग्न हैं । जीवन चमत्कारों से भर जाता है । हर सहजयोगी के इतने अनुभव है कि उन्हें लिखने की भी सामर्थ्य उनमें नही । हम जानते ही नही उस परमात्मा के प्यार को, उसकी शक्ति को और जो वह हमें देना चाहता है ।

धर्म के नाम पर उपवास करना, शरीर को कष्ट देना आदि कुसंस्कार ब्राह्मणाचार ने हमें दे दिए आप सोचिए कि कोई पिता अपने बच्चों को कष्ट में देखकर प्रसन्न हो सकता है ? माँ को यदि आपने सताना हो तो आप खाना नहीं खाते । ये सब पाखण्ड हमारे देश में इतने फैले है कि इन्हें छोड़ना बहुत मुश्किल है । प्रेम के सागर परमात्मा तो चाहते हैं कि आप आनन्द में रहें । आत्मसाक्षात्कार के बिना धर्म का मर्म आप नही समझ पाते, इसीलिए धर्म के नाम पर इतना कष्ट आप उठाते हैं ।

कितना बड़ा ये विज्ञान है कुण्डलिनी का । कैसे मूलाधार पर बैठी है । कैसे ये उठती है । इसकी जागृती जब होती है तो सबसे पहले आपकी शारीरिक व्याधाएं दूर हो जाती है । कैंसर , ब्लड कैंसर तक ठीक हो जाता है । ऐसे लोग यहां मौजूद हैं । पर यह तभी हो सकता है जब नम्रता और शुद्ध इच्छा पूर्वक आप हम से मांगे और अपनी जागृति करवा लें । यहां दिल्ली में तीन डाक्टरों ने इस पर एम.डी.पाई है । इनमें से एक का विषय सहजयोग द्वारा अस्थमा रोग का इलाज था । कुण्डलिनी जागृत होकर हमारे सारे चक्रों को प्लावित कर देती है इसके पोषण से चक्र ठीक हो जाते हैं और हम मानसिक, शारीरिक बौद्धिक और आर्थिक उन्नति की ओर बढ़ते हैं । पर यह भी नहीं कि सहजयोग में आने के बाद आपको कोई बिमारी ही नही होती । कारण यह कि सहजयोग में आने के बाद जो ध्यान, धारणा तथा प्रगति आपने करनी होती है वो आप नही करते । फिर भी आपके कष्ट बहुत घट जाते हैं ।

सहजयोग में आने के बाद एक महीने में आप पूरी तरह से सहजयोग को समझ सकते हैं और उसमें उतर भी सकते हैं । पर जिस प्रकार रोज हम लोग स्नान करके अपने शरीर को साफ करते हैं उसी प्रकार रोज अपने चक्रों को भी आपको साफ करना पड़ेगा । इसके लिए दस मिनट से ज्यादा नही चाहिएं । ये इतनी सहज, सरल पद्धति है । जैसे भी आप हैं पहले साक्षात्कार पा लीजिए । थोड़ा सा भी प्रकाश अगर आ जाय तो काम हो जाता है । अंधेरे में रस्सी समझ कर गर आपने सांप पकड़ा हो और अचानक रोशनी हो जाए तो आप फौरन सांप को फेंक देंगे । इसी तरह कुण्डलिनी जागरण के प्रकाश में आप स्वयं ही सब बुराइयां छोड़ देंगे । सभी तरह के तनावों से मुक्त हो कर आप शांति को पा लेते हैं ।

तनाव (टेन्शन) रोग आज कल बहुत फैल गया है । पहले ये रोग किसी को होता ही नही था क्योंकि लोगों की जरूरते बहुत कम थी और वो बहुत सादा जीवन बिताते थे । पर आज ऐसा नही है ।

तनाव से मुक्ति दिलाने के नाम पर बड़ी - बड़ी संस्थाएं बन रखी है और लोगों से लाखों रूपये ऐंठे जा रहे हैं । जब आपकी कुण्डालनी चढ़ जाती है तो आप निर्विचारिता में आ जाते हैं और तनाव अपने आप समाप्त हो जाते हैं ।

हमारे अन्दर तीन नाड़ियां हैं । ' इड़ा, पिंगला, सुषमन नाड़ी रे ' कहा है कबीर दस जी ने सुषुम्ना नाड़ी हमारे सूक्ष्म नाड़ी तंत्र (पैरा सिम्पैथैटिक नर्वस सिस्टम) को प्लाविव करती है - पोषण करती है । और बायीं ओर ईड़ा तथा दायीं ओर पिंगला नाड़ियां बायें और दायें स्नायु तंत्र को प्लावित करती है । इस प्रकार हमारे स्वायत्त स्नायु तंत्र (आटो नोमस नर्वस सिस्टम) का कार्य स्वचालित (आटो - बोर्न) है । ये स्वचालित पद्धति क्या है ? 'आटो' यही आत्मा है । इसके विषय में डाक्टरों को कुछ पता नही । उन्हें बायें और दायें स्नायु तंत्र में अन्तर नही पता । हालांकि अब वैज्ञानिकों का ध्यान इधर जाने लगा है । लेकिन सहजयोग में आप एकदम जान जाते हैं कि जब आप बायी ओर होते हैं आप भूतकाल में रहते हैं, पिछली बातें सोचते हैं और अन्त में सुप्त - अवचेतन में पहुंच जाते हैं, सामूहिक अवचेतन में चले जाते हैं । तो ईड़ा नाड़ी का काम यह है कि जो भी काम हम करते हैं उसे वो हमारे पास में भरती जाती है । इसके कारण जो भी हमारे शरीर में कार्य हैं वो संस्कार युक्त हो जाते हैं । हमारे सभी संस्कार - अच्छे या बुरे - जैसे भी हों, इस नाड़ी की तरफ से बनते हुए लहरों की तरह बायी ओर को बढ़ते जाते हैं । जब से ये संसार बना है तब से ही हमारे अन्दर का सुप्त - चेतन बना है और हमारे अन्दर है । उसके बाद हमारे जो अनेक जन्म हुए हैं वो भी उसी में हैं । माने हमने पशुयोनी से निकलकर मनुष्य रूप में जो जन्म लिये वो भी इसी रूप में है । आज भी एक पल, जो अभी आप यहाँ है, और जो पल आया और गया, वो भी हमारी पूरी बांयी तरफ से है ।

हमारे दांयी ओर में जो व्यवस्था है वो ऐसी है कि जो भविष्य की ओर नजर करे । उसमें हमारा शारीरिक कार्य होता है और जिससे हम भविष्य के बारे में सोचते रहते हैं - कि कल क्या करना है, परसों क्या करना है । ये सारा कार्य दांयी तरफ से होता है । तो दांयी तरफ से कार्य करते वक्त जो कुछ भी शारीरिक कार्य हमें करने हैं वो रह जाते हैं क्योंकि हम सोचते ही रहते हैं इसलिए जो लोग बहुत ज्यादा सोचते हैं उनके लिए आजकल की बहुत सारी समस्याएँ खड़ी हो जाती है । इसका एक कारण यह है कि वो लोग एकांगीय है, दांयी ओर के है । दांयी ओर झुका हुआ मनुष्य सदा आने वाले कल के बारे में सोचेगा और योजनाएँ बनायेगा । आज तक कभी कोई योजना ठीक हुई है ? योजना की असफलता से निराशा ही हाथ लगती है । तो हर वक्त भविष्य के बारे में सोचने वाला व्यक्ति दांयी ओर को होता जाता है । ऐसे आदमी को भी बहुत सारी बिमारियाँ हो जाती हैं । पहली बिमारी उसको लीवर की हो जाती है दूसरी बिमारी लीवर की गर्मी की है जिसकी वजह से अस्थमा की बिमारी हो सकती है ऐसे मनुष्य को दिल का दौरा आ सकता है, अंगघात हो सकता है । लीवर की गर्मी जब नीचे की ओर जाती है तो ऐसे आदमी को जानलेवा गुरदा रोग हो सकता है । उसे कब्ज के रोग भी सकते हैं । जब

हमारे अंग आलसी हो जाय, (लेथार्जिक) हो जाय उस वक्त हमें दांयी ओर की बिमारियाँ हो जाती है । दांयी ओर का आदमी दूसरों को सताताहै और जो बांयी ओर का होता है वो अपने को सताता है । कभी उसका हाथ टूट रहा है और कभी पैर कभी उसे जोड़ों का दर्द हो जाता है । रात दिन अपने लिए रोता ही रहता है । एन्जोइना (हृदय शूल) भी बायीं ओर का रोग है । दिल का दौरा दूसरी चीज है । बांयी ओर के व्यक्ति की मांस पेशियां क्षीण होती जाती है । ये बिमारियाँ डाक्टर लोग ठीक नहीं कर सकते । ये बिमारियाँ सहज में ही ठीक हो सकती है । फिर ऐपीलेप्सी (मिरगी) का रोग है । किसी - किसी का तो दिमाग खराब हो जाता है इस तरह की सारी मानसिक बिमारियाँ जो कि शरीर पर दिखाई देती है वो बांयी ओर की बिमारियां है । पागल आदमी को कभी दिल का दौरा नहीं पड़ता क्योंकि वो बांयी ओर होता है ।

इस तरह बांयी और दांयी दोनों ओर की बिमारियों को सहजयोग में आप एक साथ ठीक कर सकते हैं सुषुम्ना मार्ग से जब कुण्डलिनी ऊपर को चढ़ती है तो आप के चित्त को दांयी और बांयी ओर से खींच कर मध्य में ले जाती है । लेकिन यदि मनुष्य बहुत अधिक बांयी या दांयी ओर का हो और उसी तरफ से अचानक कोई अधिक जोर केन्द्रिय स्नायु तंत्र पर बने किसी चक्र पर पड़ जाय तो यह चक्र टूट भी सकता है और मनुष्य का सम्बन्ध पूरे में स्पंडे से टूट सकता है । और हो गई कैंसर जैसी बिमारी आपको । इस तरह के रोगों को मनोदैहिक (साई को सोमेटिक) रोग कहते हैं । इन बिमारियों को डॉक्टर लोग ठीक नहीं कर सकते हैं परन्तु सहजयोग में इन्हें ठीक करने के आसान तरीके हैं । सहजयोग में मूलभूत सात चक्र है और तीन नाड़ियां । इन्हें ठीक करने से ज्यादा कुछ करना ही नहीं है । जिस ओर का रोग हो उसका इलाज कर लो । बहुत आसान है । कोई पेड़ यदि बिमार है तो उसके मूल में उतर कर उसकी जड़ों का इलाज करना होगा । उसके पत्तों का इलाज करने से कोई फायदा नहीं । अपने रोगों को ठीक करने के लिए आपको अपने मूल में उतरना होगा । सूक्ष्म बनना होगा । इसके लिए आपको आत्म साक्षात्कार चाहिए । पर आजकल इस पर कोई विश्वास ही नहीं करता । अपनी आंख को देखिये, क्या कमाल का कैमरा है और आपका दिमाग क्या कमाल का कम्प्यूटर है । आप क्या कमाल के बने हुए हैं । इसकी जो आत्मिक चीज है उसके ज्ञान को प्राप्त करें । जब आत्म साक्षात्कार द्वारा सभी लोग उस 'कैवल ज्ञान' को प्राप्त कर लेंगे तो सब झगड़े समाप्त हो जायेंगे । वही सत्य है और वही परमात्मा का प्रेम भी है । आपकी कुण्डलिनी ऐसी उठती है 'शोभना सुलभागति' बड़ी शोभा से बड़े आराम से धीरे - धीरे उठती है । किसी की खटाक से भी उठती है । पर लेकिन आपको पता भी नहीं चलेगा क्योंकि यह चारों तरफ फैले हुए परमात्मा के प्रेम का कार्य है । जब आप पार हो जायेंगे तो वातावरण में छोटे - छोटे से, कोमा के आकार के, कण चमकते हुए दिखाई देते है । यही सोचते है, सब जानते है, संयोजन करते हैं और सबसे बड़ी बात है कि ये प्यार करते हैं । प्यार के इतने सुन्दर, इतने सुलभ इतने मनभावन संयोजन को देखकर आप आश्चर्य चकित रह जायेंगे । और सोचेंगे कि मेरे जीवन की सारी योजना पहले ही बन चुकी है । लंदन जैसे शहर में जहाँ हजारों लोग बेरोजगार है वहाँ पर आश्चर्य की बात है कि एक भी बेरोजगार सहजयोगी मिलना मुश्किल है । हम समझ जाते हैं कि जब सारा ही इन्तजाम वो करने वाला है तो हम बेकार में परेशान हो रहे हैं । उसका प्रत्यक्ष हो जाता है । केवल

आपको अपने ऊपर निश्चय होना चाहिए । इसके लिए आपके अन्दर आपकी कुण्डलिनी का जागरण होना आवश्यक है ।

मैंने यह सब आपको इसलिए बताया कि आपके मन की रचना ऐसी हो जाय कि आपमें साक्षात्कार पाने की इच्छा तेज हो जाये । इसकी कीमत आप आँकें । यह नहीं सोचें कि ये बेकार की चीज है । सहजयोग को बढ़ाने के लिए बहुत लोगों ने त्याग किये उन्हीं की मेहनत से आज सहजयोग कि यह स्थिति आ गई है कि आपको बिना किसी मेहनत के फल प्राप्त हो जाती है । इसलिए माँ का आपसे अनुरोध है कि संदेह को छोड़कर अपनी जागृति को प्राप्त कर लें ।

ईश्वर आपको आशीर्वादित करे ।

-

दूसरा सार्वजनिक कार्यक्रम
ताल कटोरा स्टेडियम
दिल्ली-3.3.1991

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी का प्रवचन

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा नमस्कार । डाक्टर साहब ने अभी आपको सभी चक्रों के बारे में बता दिया है । उसी प्रकार कल मैंने आपको तीन नाड़ियों के बारे में बताया था ये थी ईड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी । ये सब नाड़ियां, ये सारी व्यवस्था, परमात्मा ने हमारे अन्दर कर रखी है । इस उत्क्रान्ति के कार्य में, जबकि हमारा विकास हुआ है, तब धीरे - धीरे एक - एक चक्र हमारे अन्दर प्रस्फुटित हुआ । किन्तु सारी योजना करने के बाद, पूरी तरह से इसकी व्यवस्था करने के बाद भी एक प्रश्न था कि हमारे अन्दर ये जो परमेश्वरी यंत्र बनाया हुआ है इसको किस तरह उस परमेश्वरी तत्व से जोड़ा जाय । मैंने आपको कल बताया था चारों तरफ ब्रह्म चैतन्य रूप ये परमात्मा का प्रेम, उनकी शुद्ध इच्छा कार्य कर रही है । लेकिन ये ब्रह्म चैतन्य अभी तक कृत नहीं था इसलिए जब कलयुग घोर स्थिति में पहुंच गया तो उसी के साथ-साथ एक नया युग शुरू हुआ है जिसे हम कृतयुग कहते हैं और इस कृतयुग के बाद ही सत्य - युग आ सकता है । इस कृतयुग में ये ब्रह्म चैतन्य कार्यान्वित हो गया है । इसी कारण सहजयोग में हजारों लोग पार होने लगे हैं अर्थात् सहस्रार का खोलना बहुत जरूरी था । जब से सहस्रार खुला है, कृतयुग शुरू हो गया है । अब इस कृतयुग का अनुभव आपको साक्षात्कार के बाद आयेगा । हर पल आयेगा । आपको आश्चर्य होगा कि ब्रह्म चैतन्य का कार्य कितना सुन्दर, अनुपम और ईमानदारी का है । इसमें कहीं कोई गलती नहीं, इसमें इतना प्रावीण्य है, इतना कुशल है कि आश्चर्य होता है कि ये किस तरह कार्य करता है । तो अब आपका एक कार्य है कि आपका संबंध उस ब्रह्म चैतन्य से हो जाये, उसके लिए आपके अन्दर ये कुण्डलिनी शक्ति साढ़े तीन वलयों में बैठी हुई है । वलय को कुण्डल कहा है । इसीलिए इस शक्ति को कुण्डलिनी कहते हैं । ये शक्ति आदि-शक्ति का प्रतिविम्ब है और आत्मा परमात्मा का प्रतिविम्ब है । आपसे कल बताया था कि आदिशक्ति परमात्मा की शुद्ध इच्छा है और वो इच्छा ये है कि सब जो कुछ जो इंसान के स्वरूप, मानव के स्वरूप में इस संसार में है, सब उनके साम्राज्य में आयें और आनंद का उपभोग करें । यही उनकी एक शुद्ध इच्छा है । जिस वक्त कुण्डलिनी उठ करके और इन छः चक्रों को भेदती हुई ब्रह्म-रन्ध्र को भेदती है और उस सर्वव्यापी ब्रह्मचैतन्य से एकाकारिता प्राप्त करती है उस वक्त क्या - क्या घटित होता है वह जान लेना चाहिए । सबसे पहले जैसे आप लोगों में से बहुत लोगों को ठंडी - ठंडी हवा सी लगती है, ये ठंडी - ठंडी हवा जो आपको महसूस हुई, जिसका बोध हुआ, यही ब्रह्मचैतन्य है । कुण्डलिनी जब ऊपर चली आई तो वहां से भी आपको ठंडी - ठंडी हवा का एहसास हुआ । यह तो बाह्य की चीज हुई जिससे कि आप जान लें कि आप पा गए हैं । इसे हम आत्मसाक्षात्कार कहते हैं । उसकी शुरुआत हो गई किन्तु

आत्मा क्या है ये जान लेना चाहिए । मैंने कहा है कि आत्मा आपके हृदय में प्रतिबिम्बित होती है । आत्मा सिर्फ एक प्रतिविम्ब मात्र हमारे सारे कार्य को देखने वाला एक दृष्टा है । अभी तक उससे हमारा कोई संबंध नहीं । न वह देखता है और न ही उसका प्रकाश हमारे चित्त में है । हमारा चित्त अब भी अंधकार में ही है । तो इस आत्मा का स्वभाव क्या ? वह जान लेना चाहिए । वो जानते ही आप जान जायेंगे कि इस आत्मसाक्षात्कार से आप क्या प्राप्त करते हैं । पहले तो जब कुण्डलिनी इन चक्रों में से गुजरती है तो आपको अनेक प्रकार की नई-नई उपलब्धि होती है, जैसे शायद डॉक्टर साहब आपने बताया होगा कि क्या-क्या उपलब्धियाँ होती हैं । लेकिन जब आत्मा का प्रकाश आपके चित्त में आ जाता है तब आप आत्मा का इस स्वरूप में जो कार्य है उसे प्राप्त करते हैं । और उसका सबसे बड़ा कार्य यह है कि उसके प्रकाश में आप 'केवल सत्य' को जानते हैं । मैं कहूं सत्य को नहीं 'केवल सत्य' को । इसका फर्क समझे आप ? जितने मुँह उतनी बात होती है । जितनी आँखे उतना देखना होता है । किन्तु 'केवल सत्य' यह होता है कि जब इसे आप प्राप्त कर लें तो सब लोग एक ही चीज को जानते हैं और उसमें दूसरी शक्ति है कि ये केवल ज्ञान को देखती है जैसे कि समझ लीजिए कोई आदमी कहेगा कि ठीक है ये एक फोटो है या एक मूर्ति है या एक साधु हैं ये असली हैं । आप कैसे जानियेगा कि ये असली हैं कि नकली है ? इस तरह से आप इसे जान सकते हैं कोई अगर कहता है कि ये असली है, कोई कहता है नकली है, उसकी कोइ पहचान नहीं, उसका कोई ज्ञान नहीं, तो फिर वो जानने के लिए कोई मार्ग भी नहीं । एक ही मार्ग है कि 'केवल ज्ञान स्वरूप' जो आत्मा है उसके प्रकाश में हर चीज को देखना चाहिए । उस वक्त आप उस आदमी की ओर या उस फोटो की ओर या उस मूर्ति की ओर हाथ करके पूछें - दोनों हाथ - आत्म साक्षात्कार के बाद, कि क्या ये सत्य है ? ये गुरू सत्य है ? इतना ही पूछना है बस । ऐसे पूछते ही आपके हाथ में उस सत्य के दर्शन हो जायेंगे । आप जान जायेंगे अगर वो सत्य है तो आपके हाथ में ठंडी - ठंडी हवा चल पड़ेगी । जैसे कल यहाँ पर शिर्डी के श्री साईनाथ के बारे में किसी ने पूछा कि माँ शिर्डी के साईनाथ क्या सच्चे थे ? मैंने कहा हाथ करो मेरी ओर, एक दम उनके हाथ में जोर - जोर से ठंडी - ठंडी हवा बहने लगी । ये कुछ बातें शास्त्रों में भी लिखी गई हैं । ये जो कहा है कि परमात्मा है । आजकल तो ऐसे भी लोग हो गये हैं जो कहते हैं कि परमात्मा नहीं है । ये कहना तो बड़ी अशास्त्रीय और अवैज्ञानिक बात है कि परमात्मा नहीं है । आपने खोजा है ? आपने जाना है ? बगैर देखे ही आप कह रहे हैं कि परमात्मा नहीं है । जानने के बाद आप कहें तब तो कोई बात भी है । लेकिन अगर आप पूछें कि परमात्मा है ? एकदम आपके हाथ में ठंडक सी चलेगी । यदि आप सहजयोग में काफी उतरे हों तो ऐसे लगेगा जैसे ऊपर से नीचे तक गंगा बह रही है । एकदम से आदमी शांत हो जाएगा । सो पूरी तरह से जिसे हम केवल ज्ञान कहते हैं वह आप प्राप्त करेंगे । शुरूआत में जब तक पूरी तरह से आप नाव में नहीं बैठे तो हो सकता है कि डगमग हो, लेकिन जब आप पूरी तरह से उसमें जम जाते हैं तो आश्चर्य होता है कि छोटे - छोटे बच्चे भी बता सकते हैं कि ये साहब कैसे हैं ? अभी एक बच्चे ने (अंग्रेज बच्चे ने) फोन उठाया और मुझसे कहा - 'मां वह योगी नहीं है, वह आपसे बात करना चाहता है' ये कैसे जाना ? ये चैतन्य जो है उसका आपको बोध होता है।

कल मैंने आपको बताया कि बोध होने का मतलब होता है कि केन्द्रीय स्नायु तंत्र पे, अपनी मज्जा संस्था पर आप जानते हैं । ये कहने से नही कि ये ऐसा है, वैसा है । जैसे आप अब देख सकते हैं कि यहाँ एक सफेद चद्दर बिछी हुई है, सब लोग देख सकते हैं कि यहां एक सफेद चद्दर बिछी हुई है, उसी प्रकार आप जानते हैं अपने सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम पे कि सत्य क्या है और असत्य क्या है । फिर बताने की जरूरत नहीं, कहने की जरूरत नहीं । सो सत्य को जानना है । बुद्धि से नही हो सकता । अगर बुद्धि से होता तो इतने झगड़े क्यों खड़े होते ? कही साम्यवाद है, कही पूंजीवाद, कही प्रजातंत्र है कही राक्षस राज्य (डेम्नोक्रेसी) । ये सारे वाद झूठे है, किसी में भी सत्य नही क्योंकि ये सिर्फ हर एक की अपनी धारणा है और उस धारणा को सत्य मानकर लोग उससे चिपक गए । जैसे हमारी बात लीजिए, आप सब ये कहेंगे कि हमारे पास जब सब शक्तियां हैं तो हम तो बड़े भारी (कैपिटलिस्ट) पूंजीवादी हैं, सारी शक्तियां हमारे पास हों तो हम तो बहुत बड़े कैपटलिस्ट है ही परन्तु बहुत ही बड़े कम्युनिस्ट भी हैं क्योंकि वो शक्तियां सबको दिए बगैर हमें चैन नही । इस उम्र में भी हर तीसरे दिन सफर करते रहते हैं । चैन ही नही । जब तक दिया नही अच्छा ही नही लगता । देने की शक्ति कम्युनिज्म से नही आती और पाने की शक्ति कैपिटलिज्म से नही आती । तो हर चीज में जो सत्य का अंश है उसे जानने का एक ही तरीका है कि इस आत्मा को प्राप्त करो । तब आप समझ जायेंगे कि कौन - कौन दुनियां में आज तक हुए जो कि आत्मसाक्षात्कारी थे । कौन सी धारणाएं सत्य हैं कौन सी झूठ है । कौन सा हिस्सा धर्म का ठीक है और कौन सा झूठ है । कौन से शास्त्र में कौन सा सच लिखा गया है और कौन सा झूठ । कौन सी बात इसमें असलियत है ओर बाकी नकलियत । जिसे कहते हैं पर्दाफांश कर देना । ये सिर्फ आत्मा के प्रकाश में ही घटित हो सकता है और दूसरी बात कि आपका जो चित्त है, आपका चित्त जिसे ध्यान (अटेन्शन) कहते हैं, ये इस प्रकाश से जब प्लावित होता है, इसका पोषण होता है, जब इस प्रकाश से भर जाता है तब जहां भी चित्त घुमाइये जहां भी नजर करिए एक कटाक्ष-मात्र से भी आप बहुत से कार्य कर सकते हैं । और यहां बैठे - बैठे कही भी दुनियां में जो चीज हो गई है, जो लोग हो गए हैं और जो लोग हैं, किसी के बारे में भी आप जान सकते हैं । ऐसा ये कम्यूनिकेशन है बहुत ही कुशल । आजकल के जैसे नही कि टैलीफोन ही नही लगते । यहां बैठे - बैठे आप जान सकते हैं कि किस आदमी में क्या बात है, कौन सा चक्र उसका पकड़ा है । व्यक्ति की बुराई तो बाह्य चीज है, लक्षण है, अंदरूनी चीज ये है कि उसके कौन से चक्र पकड़े हैं । यहां बैठे - बैठे ही आप उसके चक्र ठीक कर सकते हैं । लेकिन ये कम्यूनिकेशन पूर्णतया दृढ़ हो जाना चाहिए । एक चित्तमात्र से आप इतना कार्य कर सकते हैं । और आपका चित्त जो है वह एकाग्रता से सब देखता ही रहता है । बस देखता है । मैंने आपको कल कहा था कि किसी चीज को देखते हुए सोचने की कोई बात नही । देखते बनता है, कितने प्रेम से यह सजाया है, यह भी सोचने की बात है ? या किस कलाकर ने अपनी कला का आनंद यहां भरा है, यह भी सोचने की बात है ? वह जो कुछ सम्पूर्ण में सोचने की बात है । वह जो कुछ सम्पूर्ण में उसने यहां दिया है वो सारे का सारा चैतन्य बनकर के झरने लगजाता है ओर बस आनंद के सागर में मनुष्य डोलायमान रहता है । जिसे हम शुरूवात में कहते हैं कि निर्विचार समाधि प्राप्त हुई ।

हठ योग में जिन लोगों ने सिर्फ व्यायाम करना जाना है उन्हें जानना चाहिए कि व्यायाम एक बहुत थोड़ी सी चीज है । पातांजली का अगर आप पातांजल शास्त्र पढ़ें तो उसमें समाधि की ही बात की है, पहल निर्विचार, फिर सविकल्प, फिर निर्विकल्प समाधि । इस तरह से उन्होंने इसकी तीन दशायें दिखाई हैं, वही आपको सहजयोग में प्राप्त होंगी । समाधि का अंग्रेजी में अर्थ हो सकता है (अवेयरनैस) चेतना, कि आपमें एक नया आयाम, एक नया डायमेन्शन आ जाता है जहां आप बुद्धि से परे उठकर के हर चीज को समझने लग जाते हैं । सहजयोग में आपने सुना होगा कि बहुत से (म्यूजिशयन्स) संगीतकार हैं, बहुत से (आर्टिस्ट) कलाकार हैं (जो बड़े मशहूर आजकल हो गए हैं) वो सहजयोग में आते ही बहुत बड़े आर्टिस्ट हो गए पहले कुछ भी नहीं थे । उसकी वजह यह है कि उनका चित्त इतना सकाग्र हो गया है कि जिस भी चीज को देखता है उसका पूरा का पूरा हिसाब - किताब उसका पूरा चित्त ही मानों उसके मनस्पटल पर छा जाता है । बहुत से बच्चे ऐसे होते हैं जो स्कूलों में पढ़ने में बहुत कमजोर होते हैं, सहजयोग में आ के अब्वल आने लग जाते हैं । यहां तो रिकार्ड है कि एक लड़का 23 साल के अंदर सी.ए. हो गया । अभी तक कोई नहीं हुआ । । सब चीज के रिकार्डज् हैं । इंजीनियर्स जो कभी इतनी उम्र में नहीं हुए थे वे हो गए । सहजयोगी बच्चे पढ़ने लिखने में बहुत तेज हो जाते हैं । स्वभाव में उनके अदब आ जाता है, अपनी संस्कृति की जो विशेषता है कि हमें अदब करना चाहिए । सुबह से पृथ्वी तत्व को हम नमस्कार करते हैं कि तुझे हम पैर से छुएंगे, क्षमा करना । यह जो अदब है पहले सिखाया जाता था, बताया जाता था, देखा जाता था । अपने आप ही मनुष्य नम्र हो जाता है । उसमें एक अदब आ जाता है और उस नम्रता में बड़ा मजा आता है । जिन - जिन बातों के बारे में धार्मिक पुस्तकों में लिखा गया है वह सारे ही तत्व हमारे अंदर जागृत हो जाते हैं । ऐसे - ऐसे लोग जो मशहूर गुस्सैल थे, गुस्सैल तो क्या कहना चाहिए बहुत ही ज्यादा उपद्रवी लोग थे, जो हाथ में हमेशा तलवार बंदूक लेकर घूमते थे, वो भी हमारे इतने प्यारे बेटे हो गये कि लोगों को समझ ही नहीं आता कि इनको क्या हो गया है । ऐसे बदल कैसे गये ? ये इतने सुन्दर कैसे हो गए ? तो अपने अंदर का जितना भी गौरव है जितनी भी विशेषताएं हैं जितना भी प्यार है, वो सारा ही एकदम उमड़ पड़ता है और मनुष्य शांति में स्थापित हो जाता है । जैसे एक चक्का है, चक्र है, पहिया है वह घूमता है लेकिन उसका जो मध्य है जो धुरी है वह शांत रहता है । आप चक्के की उस परिधि से निकलकर के मध्य में आ जाते हैं ।

ये आत्मा आप ही के अन्दर बसा हुआ आपका अपना है और कुण्डलिनी भी आपकी आपनी शक्ति है । आत्मा के प्रकाश में जो सबसे बड़ी चीज देखनी है वह है आनंद । आनंद में सुख ओर दुख नहीं होता । एकमेव चीज निरानंद, सब निराआनंद ओर उस निरानंद को आप अपने आप ही प्राप्त कर लेते हैं । जैसे कि सब कुछ ड्रामा चल रहा है चारों तरफ और फिर भी आप उसमें उलझ जाते हैं । गर कोई लड़ रहा हो तो आप उसके साथ लड़ने लग जाते हैं । यदि कोई रो रहा हो तो आप उसके साथ रोने लग जाते हैं । लेकिन जब ड्रामा खत्म हो जाता है तो आपको पता चलता है कि ये तो खत्म हो गया, अरे ये तो ड्रामा था । उसी प्रकार भव सागर पार करके दुनियां के झमेले की ओर आप देखतें हैं कि

ये तो सारा खेल है, ये लीला है । क्योंकि विशुद्ध चक्र श्री कृष्ण की बात आप समझ सकते हैं । आदि - गुरुओं के बताये सारे धर्म आपके अन्दर जागृत हो जाते हैं । फिर सहजयोगी गलत काम नहीं कर सकता । डर से नहीं, बहुत से लोग डर से अच्छे होते हैं, क्योंकि वे अच्छाई का मजा उठाने लग जाते हैं अच्छे होने का मजा उठाने लगते हैं । मैंने तो अति कंजूस लोगों को दानत्व में मशहूर होते देखा है । उनके अंदर छुपा हुआ दाता उभर आया बाहर । आपसी प्रेम का यह सारा कार्य है । सारे विश्व को ये प्रेम चाहिए ।

परमात्मा का प्रेम निर्व्याज्य है, अलिप्त है । जैसे कि एक पेड़ में उसके अंदर का तत्व - सत्व, सब कुछ चढ़ता है । पेड़ की हर शाखा, पत्ते फूल सबको देता है । फिर भी किसी एक चीज में अटक नहीं जाता है । मान लीजिए कि उसे एक फूल पसंद आ जाय, यदि वह सत्व वहीं अटक जाय तो पेड़ तो मर जायेगा और फूल भी मर जायेगा । तो किसी चीज में अटकाव करना ही प्रेम को मारना है । मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरा घर, ये ममत्व है । अंत में वही बेटा, बेटी और घर इतना सताते हैं कि अरे बाप रे बाप । अगले जन्म तो बाबा एक बच्चा न हो तो अच्छा है । ये तो सब को अनुभव है । इस अनुभव से जो आपने ज्ञान प्राप्त किया वह बड़ा दुःखदायी लगा होगा । आत्मसाक्षात्कार से सहज में ही आप जान लेते हैं कि किसी से भी लगाव करने की कोई जरूरत नहीं । जिसके साथ जो करना है वह करना है । लेकिन किसी में अटकने की कोई जरूरत नहीं । स्वतः ही आपके व्यक्तित्व में वह बात आ जायेगी । मैं किसी चीज को मना नहीं करती । परदेश में आप जानते हैं कि बहुत से लोग ड्रग्स लेते हैं । यहां भी शुरू हो गया है मैंने सुना है थोड़ा बहुत । पर वहां के लोगों में बड़ी ईमानदारी है । वे ढोंगी नहीं है । यहाँ पर लोगों में जरा ढोंग है । वजह ये बड़ी - बड़ी बातें हम जानते हैं हमारे सामने राम - लक्ष्मण रहे, कृष्ण रहे, नानक रहे, कबीर रहे, तुकाराम, सब बड़े - बड़े लोग इस देश में आये । तो हम लोग यह सोचते हैं कि चलो कम से कम उन बड़े - बड़े आदर्शों का दिखावा तो हम कर सकते हैं कि हम भी अच्छे हैं । मंदिर में मूर्ति रखेंगे श्री राम की और बीवी को रोज मारेंगे । कोई - कोई लोग तो ऐसे हैं कि सुबह से शाम तक सौ झूठ न बोलें तो वे हिन्दुस्तानी हो ही नहीं सकते। हिन्दुस्तानी की पहचान यह है कि झूठ बोलना चाहिए । सोचिए - ये सब चीजें हमारे अंदर इसलिए समा गई कि हम ढोंग करते हैं । हर आदमी अपने को आदर्श बताने की कोशिश करता है । अपने अंदर उसने कभी देखा ही नहीं । ये देखा ही नहीं कि मैं क्या हूं ? मैं क्यों झूठ बोलता हूं ? क्या जरूरत है मुझे झूठ बोलने की ? ठीक है आप नम्रता रखें, बोलें ही मत, लेकिन हमारे सामने इतने बड़े - बड़े आदर्श व्यक्तियों की जीवनियां हैं कि उनको देखकर हमें लगता है कि इनके सामने हम इतने बुरे लगेंगे । इसलिए दिखावा करना अच्छा है । चाहे फिर वह धार्मिक हो, चाहे नास्तिक हो, चाहे वह मंदिरों में जाए चाहे मस्जिदों में, चाहे वो भगवान को कुछ भी कह दें । अपने ये जो साधू संत हो गए हैं उनकी क्या विशेषता थी ? वह क्यों नहीं झूठ बोलते थे ? वे क्यों नहीं दुष्टता करते थे ? उन्होंने ऐसे संघ क्यों नहीं बनाये जो सबकी मार पीट करें ? उनमें कौन सी ऐसी शक्ति थी कि उनको इतना सताया, इतना तंग किया तो भी वे शांति पूर्वक अपने में ही आनंद विभोर रहते थे ? तो इसमें भी हमारा दोष नहीं । पर हमने ढोंग किए हैं तो उनमें कम से

कम एक बात तो अच्छी है कि हम इन आदर्शों को विशेष मानते हैं । पर आपने ढोंग करने छोड़ दिए तो मुक्त हो जायेंगे, विदेशों में मैं देखती हूं वहां तो कोई संस्कृति ही नहीं है । ऐसी गंदी संस्कृति है कि इनसे कुछ सीखने का हमारे लिए है ही नहीं, कुछ भी सीखने का नहीं लेकिन ये ढोंग छोड़ना पड़ेगा। अपनी संस्कृति में कुछ चीजें अत्यन्त सुन्दर हैं । परदेशी कोई आदर्श नहीं हुए इसलिए ढोंग नहीं है । इसलिए सहजयोग में आए ओरपार हो गए खट से । गहनता में उतर जाते हैं । एक रात में लोगों ने ड्रग्स छोड़ दी जिसके नशे में बेहोशी की हालत में आये थे प्रोग्राम में । शराब छोड़ दी एक रात में । लेकिन हिन्दुस्तान में नहीं छूटती जल्दी से । थोड़ा टाइम लग जाता है । कुछ लोगों की आदत छूट भी जाती है । एक साहब सहजयोग में आकर भी तम्बाकू खाते थे । उनसे छूट नहीं रही थी वो आकर कहने लगे मां पता नहीं क्यों जब मैं आपके फोटो के सामने ध्यान करने बैठता हूं तो मेरा मुंह ऐसा फूलने लग जाता है । कहीं हनुमान जी तो नहीं हो रहा हूं ? मैंने कहा कि कोई विशुद्धि का ही कष्ट है । कहने लगे हाँ विशुद्धि मेरी बहुत दुःखती है । मैंने कहा देखिये मैं सच बात बताऊं ? कहने लगे, हाँ । आप तम्बाकू खाते हैं तो आप हनुमान जी जैसे हो ही जायेंगे । तम्बाकू खाना आप छोड़ दीजिए खट से । उनके दिमाग में आया मां ने कैसे जाना । उस दिन से तम्बाकू छूट गया । फिर भी साल भर लगा । साल भर तक वह हनुमान जी बनते रहे । तब लगा कि सब ठीक हो गया । तो सहजयोग में यह भी इलाज है । पर आप ढोंगी पना करेंगे तो चारों तरफ फैला हुआ परम चेतन्य उसका भी इलाज कर लेगा । बहुत बड़ी सजा नहीं देगा, थोड़ी सी । एक और साहब सहजयोग में आये दो साल रहे तो भी सिगरेट पीते थे । कहने लगे कभी - कभी पीते हैं । मैंने कभी किसी से नहीं कहा कि सिगरेट मत पियो, शराब मत पिओ, नहीं तो आधे लोग ऐसे ही उठ जायेंगे । सहजयोग के बाद देखेंगे । तो एक दिन वो गाड़ी चला रहे थे । उनके साथ छः और लड़के घर के गाड़ी में जा रहे थे । अब सात आदमी गाड़ी में, कहीं जाकर के एक्सीडेंट हो गया । सारी गाड़ी टूट गयी, सब कुछ हो गया, सब लड़कों को चोट आई, लेकिन इन महाशय को सिर्फ.. विशुद्धि की अंगुली पर चोट आई । जब आप सिगरेट पीते हैं तो दायी विशुद्धि पकड़ती है । तब आये लेकर मेरे पास अंगुली । कहने लगे मां आज से सिगरेट छूट गई । आदि शक्ति की ये जो शक्तियां हैं ये प्रेम से भरी हैं । ऐसे छोटे - छोटे तरीकों से आपको वो ठीक करती है । और आप स्वयं ही जानते हैं कि मेरा ये चक्र पकड़ा है । जैसे दिल्ली में जब मैं शुरू में आती थी तो लोग कहते मां मेरा तो आज्ञा पकड़ गया माने ये कि मैं बड़ा अंहकारी हूं, मेरे अंदर अंहकार है । मां इसे ठीक करो । लेकिन आप ही बताइये अगर आपने किसी से कहा कि तुम अंहकारी हो, सद्दाम हुसैन से भी कहिए, तो मारने को दौड़ेगा । वो मानेगा थोड़े ही, कोई नहीं मानेगा कि मैं अंहकारी हूं । पर साक्षात्कार के बाद आप स्वयं कहते हैं मां मैं बड़ा अंहकारी हूं । ऐसा नहीं, अब सारी ही भाषा चक्रों की शुरू हो गयी । चक्रों की ही बात होती है कि मां मेरा आज्ञा पकड़ा है ठीक करो । इस प्रकार मनुष्य की भाषा ही बदल जाती है । आप एक दूसरे को जानने लगते हैं कि इनका क्या पकड़ा है ? एक साहब सहजयोग के बाद भी बहुत जोर - जोर से डांटते थे लड़ाई करते और बाकी सहजयोगी देखते थे । खासकर दिल्ली से कुछ लोग पहुंचे थे उधर महाराष्ट्र में । महाराष्ट्र के लोग जरा दब्बू हैं । दिल्ली वाले सोचते हैं कि हम राजधानी में रहते हैं सो उन्होंने झाड़ना शुरू कर दिया, वे चुपचाप सब खड़े रहे । तो मैंने कहा कि तुम लोगों ने कुछ कहा क्यों

नही ? कहने लगे माँ क्या कहें इनकी दायी विशुद्धि पकड़ी हुई थी तो वो करते क्या ? राइट विशुद्धि पकड़ी थी तो उनको तो बोलना ही था । हम उनसे बोलकर क्यों अपनी राइट विशुद्धि खराब करते । बोलने दीजिए हर्ज क्या है ।

तो स्थित प्रज्ञ की जो परि भाषा आपको गीता में बताई है वो मनुष्य के ऊपर है । और जैसे कि विशुद्धि चक्र में बताया कि आपसी प्रेम आये । एक जमाने में भारत को गुलाम रखने वाले घमंडी अंग्रेज भी सहजयोगी बन कर जब यहां आते हैं और महाराष्ट्र के देहातों में घूमते हैं, उनकी झोंपड़ी में बैठ कर के खूब आनंद से गाना गाते हैं मराठी और हिन्दी में। बहुत से मुसलमान सहजयोग में आ गए हैं । आपको आश्चर्य होगा । और सब गणेश जी की स्तुति करते हैं । और जो कट्टर हिन्दू थे वो भी अल्लाह हो अकबर करके अपनी विशुद्धि को ठीक करते हैं । तो आपको सहजयोग में मुसलमान भी होना पड़ेगा और सिख भी होना पड़ेगा, इसाई भी होना पड़ेगा । असलियत में, नकलियत में नहीं । बाकी सब नकलियत में बैठे हैं । सब धर्मों का जो मजा है उठाइये । ये क्या बेवकूफी है, लड़ रहे हैं । सब धर्मों में इसका मजा है कि ऊंची ऊंची बातें कही हैं । इतनी कुछ हमारी व्यवस्था कर गए उसका मजा उठना चाहिए । अंधकार वश आपस में लड़ रहे हो । दूसरे का भय, एक साँप भी दूसरे साँप से नही डरता, कोई जानवर भी मैंने सुना नही जो एक दूसरे से डरता है । पर इंसान एक दूसरे से बहुत डरता है । और जितना देश प्रबल होगा जैसे अमेरिका । अमेरिका में एक अमेरिकन दूसरे से डरता है । जितना वो डरता है वो हम लोग नही डरेंगे । इसकी वजह यह है कि व्यक्तिगत रूप से सबने अपनी - अपनी प्रगति कर ली है । व्यक्तिगत प्रगति में मनुष्य अकेला छूट जाता है लेकिन आत्मसाक्षात्कार के बाद सामूहिकता में वह पनपता है । जैसे कि आप एक ही विराट के अंग प्रत्यंग हो गये एक ही अकबर के आप अंग - प्रत्यंग हो गये । एक हाथ को तकलीफ हुई तो दूसरा हाथ फौरन मदद को आ जाता है । सारा संसार आपका मित्र है, सारा संसार आपकी मदद करने वाला है । ये सब कुछ केवल सहजयोग से हो सकता है ।

उत्थान का समय आ गया है । इस उत्थान को आप प्राप्त करें और उसमें जमें और अपने आत्मसाक्षात्कार में पूर्णतया जिये । यही आत्मिक आनंद है जिसे आत्मानंद कहते हैं । उसे प्राप्त करना है, उस सुख को उठाना है । सब कुछ आपके लिए तैयार है । पूरा इंतजाम है सिर्फ आपकी मनकी तैयारी हो तो ये कार्यपूर्णतया हो सकता है । सहजयोग में आने के बाद यह जान लेना चाहिए कि अभी भी अंदर चक्रों में कुछ न कुछ दोष है। उसको पूरी तरह पहले स्वच्छ करना है और ठीक से रखना है । किस तरह से करना चाहिए यह आपको सीखना चाहिए । गर आपको अपनी जरा भी इज्जत है, जरा भी अपना ख्याल है, जरा भी अपने साक्षात्कार को आप विशेष चीज मानते हैं तभी आप इसे पा सकते हैं । आलतू फालतू लोगों का यह काम नहीं इसको चाहिए विशेष। जैसे आप विशेष हैं तभी तो आप यहां आए हैं । लेकिन आपने अपनी विशेषता जानी नही । इसे पूरी तरह से जान लें, ये बड़ा भारी काम है । सारे संसार में हो रहा है । हमारे पति भी आप जानते हैं यूनाइटेड नेशन्स में सेक्रेटरी जनरल रहे, और ।34

देशों में काम किया वह कहते हैं कि सहजयोग वास्तविक यूनाइटेड नेशन्स है । हजारों आदमी इकट्ठे हो जाते हैं । हर दिसम्बर में हम लोगों का मेला लगता है । आठ - दस दिन हम लोग गणपतिपुले में रहते हैं । इस मर्तबा 56 देशों से लोग आए थे । कोई झगड़ा नहीं कुछ नही सब आपस में प्रेम से थे । कोई झगड़ा नही बच्चों का, स्त्रियों का, पुरूषों का कोई झगड़ा नही । और इतनी शुद्धता । अपने पति के साथ विदेश में रहते हुए मैं देखती हूं कि आदमी किसी औरत के पीछे भाग रहा है वह औरत उस आदमी के पीछे भाग रही है । मुझे समझ नही आता । ये सब पागलपन छूट जाता है। मनुष्य एकदम शुद्धस्वरूप हो जाता है । जैसा हमारा नाम निर्मल ऐसे आप सब निर्मल हो जाइये । ये सब व्याधियों और लालच इनसे आप सब छूट जाते हैं । इनसे एक दम फारिक हो जाते हैं ।

मैं आपको कोई बड़े - बड़े आश्वासन नही दे रही । जो आप हैं इसे आप प्राप्त करें । लेकिन इसमें सामूहिकता से कार्य होना है । गर आप कहें कि मैं घर में अकेला पूजा करता हूं तो इससे कुछ नही होने वाला । इससे आप की गहनता बढ़ेगी लेकिन वह रूक जायेगी क्योंकि जब तक पेड़ फैलेगा नही तब तक गहनता आयेगी नही और अगर आप सिर्फ फैलते ही गये और गहनता नही जोड़ी तो भी आप में असंतुलन आ जायेगा । इसलिए जो संतुलन धर्म का है वह आपके अंदर जागृत होने के लिए है । आपको सामूहिकता में आना है । सामूहिकता में ही यह कार्य हो सकता है । कल भी एक साहब ने बताया यों मैं घर में सब करता ही हूं, मैं आपको मानता हूं तो भी मुझे बीमारी आ गई । मैंने कहा मुझे मानने से कुछ नहीं होगा । आपको सबकी माननी होगी । जैसे एक नाखून टूट जाये फिर उसकी कौन परवाह करता है ।

सहजयोग का आज का तरीका सामूहिकता का है । एक देश ही नही सारे संसार के देश इसमें बंधे हुए हैं । हमारी छोटी - छोटी बातों को हमें बुद्धि से नही छोड़ना सहजयोग से छूट जायेगी । कुण्डलिनी के जागरण से छूट जायेंगी । नहीं तो आप तो जानते हैं कि हम लोगों के दिमाग कैसे है ? छोटे - छोटे संकीर्ण दिमाग हमारे बन गए भय के कारण, अज्ञान के कारण । प्रकाश में हम जानते हैं कि हम सब एक हैं । तो सारा ही सहजयोग का कार्य प्रेम का है । इस प्रेम की शक्ति को हम आज तक कभी भी उपयोग में नही लाये । सिर्फ द्वेष की शक्ति को इस्तेमाल करते रहे । लोग समझते हैं कि द्वेष की शक्ति बड़ी शक्तिशाली होती है । कोई न कोई बहाना बनाकर उससे द्वेष करो । कोई एक ग्रुप बना लिया, उससे द्वेष करो । लेकिन प्रेम की शक्ति मानसिक नही है, परमात्मा की शक्ति है । और वह समर्थ परमात्मा है । इसकी शक्ति को प्राप्त करने के बाद कौन सी ऐसी दुनियां में शक्ति है जो इसे झुका सकती है ? सारी दुनियां आज आपके भारतवर्ष में आपके चरणों में आ सकती है क्योंकि इसका धरोहर आपका है । आपके पास संस्कृति का इतना बड़ा दान है । बहुत बड़ी सम्पदा है आपके पास । और ये भारत वर्ष साक्षात् योगभूमि है । एक बार हम प्लेन से आ रहे थे । मैंने पति से कहा कि आ गए हम

हिन्दुस्तान में । कहने लगे कैसे ? मैंने कहा देखो चारों तरफ चैतन्य है । चैतन्य कैसे चमक रहा है ? उन्होंने पायलट से जाकर पूछा । उसने कहा अभी एक मिन्ट पहले हम आए हैं । ये ऐसा अपना भारतवर्ष है । इस पृथ्वी को आप क्या समझते हैं जिस पर आप बैठे हैं ? यहां हजारों साधू संतों ने अपना खून सींचा है । इस पवित्र भूमि पर रह करके आप बहुत आसानी से इस पवित्रता को पा सकते हैं । लेकिन जो कुछ गंदगी इधर - उधर इकट्ठी हो गयी है वह छूट जानी चाहिए । इसके लिए गहनता चाहिए । अपने आप से सब चीज धीरे - धीरे छूट जाती है । अब सहयोग दिल्ली में बहुत फैल गया है । और जब मैं यहां पहले - पहले आई थी मारे डर के मेरा सारा बदन संकुचा गया कि मैं कैसे लोगों को सहजयोग समझाऊंगी । औरतें तो फैशन की बात कर रही थी और आदमी नौकरी की बात कर रहे थे । मैंने कहा इनके बीच में मैं कहां चलूं और क्या बात करूं ? अब देखिए बदल गया जमाना । अब लोग आत्मा की बात कर रहे हैं, प्यार की बात कर रहे हैं । सत्य युग आने में देर नहीं । सब आप ही पर निर्भर है । इसलिए आपसे विनती है कि अगर आपको आत्म साक्षात्कार हो भी जाए तो भी इसको आखिरी चीज नहीं समझना । अभी आपको सम्पूर्ण में उतरना है । समग्रता में उतरना है । समग्र होना है । पूर्ण को प्राप्त करना है और उस पूर्णत्व को प्राप्त करने के लिए आपको थोड़ा सा समय देना है । यहां पर बहुत अच्छे सहजयोगी लोग हैं उनसे पूछ करके आप चल सकते हैं । आप जानते हैं कि दरवाजा खुला है, पागल भी अंदर आ ही जाते हैं । हर तरह के लोग आ जाते हैं । बहुत से लोग उनको ही देख के भाग जाते हैं । गर वो पागल हैं आप तो पागल नहीं । यहां तो सबके लिए दरवाजा खुला है । बहुत से लड़के अंदर आ जाते हैं, बहुत से गुस्सैल आ जाते हैं । हर तरह के लोग अंदर आ जाते हैं आने दीजिए लेकिन आप उनको देखकर भाग मत जाइए और बैठकर कोशिश कीजिए कि हम पूरी तरह से इस ज्ञान को प्राप्त करें और आज का जो महान युग धर्म है, इस परिवर्तन का महानकार्य जो कि इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है, वह अपने आने वाली पीढ़ी के लिए कितना आनंददायी है । यह सोचकर आप लोग सब एकाग्रता से पूर्णतया सहजयोग में उतरें । अपने प्रति एक श्रद्धा रखते हुए, अपने प्रति एक विश्वास रखते हुए कि मैं मानव हूं और मैं अतिमानव हो सकता हूं, इस दृढ़ भावना से आप अपना आत्म साक्षात्कार माँगे और यह कार्य हो सकता है। इस तरह से हमारे पर पूर्ण अधिकार रखते हुए आप इसे प्राप्त हों ।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद ।

नोयडा पब्लिक प्रोग्राम

दिल्ली 4-3-91

परम पूज्य श्री माता जी निर्मला देवी का प्रवचन

आप सभी साधकों को हमारा प्रणाम । सत्य के बारे में लोगों की अनेक कल्पनाएँ और धारणाएं होती हैं लेकिन एक पते की बात आपको बताती हूं कि सत्य परमात्मा का प्रेम है । प्रेम ही सत्य है और सत्य ही प्रेम है । और वो ही ज्ञान है । आज तक बहुत कम लोगों ने प्रेम की बात की क्योंकि प्रेम का अर्थ वो ठीक से नही लगा सके । प्रेम को समझ नही पाये । परमात्मा प्रेम मय हैं और वो सबके लिए प्रेम बांटते हैं । वो रहीम हैं, वो सबपे रहमत करते हैं । वो करूणा के सागर हैं । वो प्रेम के सागर हैं । ऐसी बातें तो सब ने कर ली । किन्तु ये प्रेम क्या है इसके बारे में खास चर्चा नही हुई । उसका कारण यह है कि लोग प्रेम को ममत्व समझ लेते हैं । इसलिए शायद बहुत समझ करके इन सब महानुभावों ने यह जरूर कहा कि परमात्मा प्रेम के सागर हैं । लेकिन वो प्रेम के सागर हैं क्या ? सागर को तो सभी ने देखा ही होगा । सागर में हर तरह के भयंकर जानवर रहते हैं और उसकी अपनी कोई हैसियत भी नही है । जब चन्द्रमा उसे खीचता है तो उसकी ओर खिंच जाते हैं । तो ये प्रेम के सागर परमात्मा हैं । अन्तरयामी परमात्मा हैं जो सबको जानते हैं । सारी सृष्टि को उन्होंने बनाया है, मानव को बनाया है । एक छोटे अमीबा से उठा के इस तरह का बना दिया । उस परमात्मा को हम समझते हैं वो ज्ञान के सागर हैं । पर उनको जो ज्ञान है वो प्रेम का ज्ञान है । वो जानते हैं कि प्रेम कैसे किया जाता है । हमारे लिए जो प्रेम का ज्ञान है वो संकीर्ण है । सीमित है । हमारे लिए हमारा बच्चा हमारा धर्म हमारा गांव, गांव से थोड़ा बढ़ गए तो अपना देश । इस प्रकार प्रेम में थोड़े से सीमित भाव आएंगे । और कुछ स्वार्थ भी । हम लड़ेंगे अपने लड़के के लिए । हम लड़ेंगे और किसी चीज़ के लिए । उसमें स्वार्थ की भावना होती है । लेकिन परमात्मा का जो प्रेम है वो ज्ञानी है । वो सब कुछ हमारे बारे में जानते हैं । आप क्या हैं ? आपकी क्या परेशानियां हैं ? आप किस ऊंचाई में रहते हैं । आपमें कौन से दोष हैं । सब कुछ जानते हैं । तो भी वो आपको प्रेम करते हैं । क्योंकि वो जानते हैं कि इस प्रेम की शक्ति को किस तरह से उपयोग में लाना चाहिए । मनुष्य के प्रेम में कोई शक्ति नही है । परमात्मा के प्रेम में शक्ति है । और वो शक्ति स्वयं ज्ञानी है । जैसे कि एक मां है । वो अपने बच्चों को प्यार करती है । अपने बच्चे को बिगाड़ेगी । दूसरे के बच्चे को सताएगी एक बाप है तो वो अपनी पत्नी की बात मानेगा अपने घर वालों को सताएगा । अगर औरों की मानेगा तो बीवी को सताएगा । उसमें संतुलन नही । उसमें ये सूझ बूझ नही है क्योंकि ज्ञान नही है । उसके प्यार की शक्ति में ज्ञान नही है । परमात्मा का प्रेम आपके बारे में जानता है और जब भी जानना चाहे जान सकता है । जहां उन्होंने नजर की जहां उनका चित्त गया वो जान जायेंगे कि क्या चीज़ है । लेकिन आप तो जान गए अपने चक्रों पर । पर ये भी वो जानते हैं कि इनको ठीक कैसे करना है । और तरीका इतना सुन्दर है और मधुर है कि उसको समझने के लिए हमारे पास दिल होना चाहिए । जैसे शबरी के बेर । शबरी एक भीलनी थी । जाति की नीची । बुढ़िया थी । उसके दांत टूटे हुए थे । दो चार दांत बिचारी के पास थे । जब श्री राम आ रहे थे तो उसने अपने दाँत लगा लगाकर हर एक बेर को चखा । और खट्टे बेर फेंक कर सिर्फ मीठे

रख लिए । उसने वे बेर जब श्री राम को दिये तो उन्होंने उनमें प्रेम की झलक देखी । जान लिया कि ये प्यार का दर्शन है । बेर श्री सीता जी ने भी खाये । झूठी चीज़ तो हम किसी की भी नही खाते । और एक भीलिनी के झूठे बेर खा रहे हैं दोनों । लक्ष्मण जी को बड़ा गुस्सा चढ़ रहा था । उन्होंने सोचा कि ये क्या बदतमीजी है । इतने बड़े साक्षात अवतरण । और ये झूठे बेर खिला रही है । जब सीता जी ने कहा कि मैंने ऐसे बेर कभी नहीं खाए तब उनका भी जी किया खाने को । बेर खाते ही उनका गुस्सा उतर गया । एक दम ठंडे हो गए । तो किस तरह से ये छोटी-छोटी चीज़ों से मनुष्य को ऊंचा उठाने का प्रयत्न है परमात्मा का । सिर्फ ये प्रेम की ही लहरों में वो ऊपर उठ सकता है, और कोई तरीका उनको ऊपर नहीं उठा सकता । आप डंडा लेके खड़े हो जाइये । उनसे कहो सवेरे चार बजे उठो, नहाओ, सर के बल खड़े हो । ये करो, वो करो । फौज लगा दो । ये परमात्मा ही जानते हैं कि हर आदमी को किस तरह से ठीक करना चाहिए । थोड़ा बहुत हम भी जानते हैं । जैसे एक बार गगनागिरि महाराज, जो बहुत गुस्सैल थे, उन्होंने सबसे कहा 'आदि - शक्ति आई है उनसे जाकर मिल आओ'। मेरे पास क्यों आते हो ? जब मैं कोल्हापुर गई तो मैंने भी सोचा कि मैं इस महाराज को देख आती हूं । वे बहुत ऊंचाई पर रहते थे । बड़ी चढ़ाई थी । सबने कहा कि आप तो किसी गुरू के पास नहीं जाते तो मैंने कहा कि हाथ तो लगाओ और देखो तो सही । उनको चैतन्य की लहरें आने लग गई । जब हम ऊपर चढ़ रहे थे तो खूब जोरों से बरसात हुई । और इन गुरू जी महाराज का, कहते थे, कि इनका बरसात पे बड़ा ही काबू है । और बरसात हुई जा रही है और उनका वश पता नहीं क्या हो गया । जब मैं ऊपर गई तो वो गर्दन हिला के गुस्से में बैठे थे । मैं तो पूरी भीग गई । उनका तो गुस्सा ही नहीं उतर रहा था । उनकी दोनों टांगे गई हुई है तो वो चल नहीं पाते । उनको उठाके लाये और सामने बिठाया । कहने लगे "क्या मां, आपने मेरा अहंकार उतारने के लिए ये बरसात की"? मैंने कहा "मुझे क्यूं आपका अहंकार उतारना है"। आप आने वाले हैं मेरे पास, मुझे खबर आ गई । देवी - देवता आके बैठ गये । और आप भीगते हुए मेरे घर पे आये । कितनी शर्म की बात है मेरे लिए । तो मेरा अहंकार तोड़ने के लिए ही आपने ये किया । मैंने कहा सच बात ये है कि तुम मेरे सन्यासी बेटे हो । और तुमने मेरे लिए साड़ी ली है । और मैं सन्यासी से तो साड़ी नहीं ले सकती । लेकिन अब भीगी हुई हूं तो तुमसे लेना ही पड़ेगा । "ये कहते ही उनके आंखों से आंसू बहने लग गए । सारा गुस्सा चला गया और जो बरसात बाहर हुई थी वो आंखों से होने लगी । मां तुमने कैसे जाना कि मेरे पास आपके लिए साड़ी है ? मैंने कहा मैंने देखा जब तुम ने खरीदी तब मैं वहीं थी" । तब उनकी समझ में बात आई । मैंने कहा देखो बेटे । मैं जब आ रही हूं और मेरे ऊपर से बरसात हो जाए तो सारी सृष्टि में चैतन्य नहीं फैल जायेगा ? सब सुन्दर हो जाये तो क्या हर्ज है कि एक बार मैं भीग गई ।" तो परमात्मा को समझने के लिए पहले हमें अहंकार को एक तरफ करना चाहिए।अहंकार की बिमारी जब मनुष्य पर चढ़ जाती है तो उसे पहले गुस्सा चढ़ता है कि हमने ये सोचा था और ऐसे नहीं हुआ । हम ये करना चाह रहे थे, वो नहीं हुआ । जब अहंकार चढ़ जाता है तब परमात्मा इसी प्रेम के ज्ञान से इस तरह से खेलता है कि उस आदमी का अहंकार कम कर दे । इसका इलाज परमात्मा ही कर सकते हैं । इस तरह से करते हैं कि आपको पता भी नहीं चलेगा

कि आप में अहंकार है लेकिन आप ठीक हो जाएंगे । अहंकार के कारण, मनुष्य जो वास्तविक है उसे देख ही नहीं सकता और जो झूठ है उसकी ओर दौड़ता है । किसी ने पूछा मुझ से कि ये सब लोग झूठे गुरूओं के पीछे क्यूं भागते हैं, जब वो पैसा लेते हैं जब वो दगा देते हैं, जब उनके शिष्यों ने कुछ भी नहीं पाया । उसकी वजह है कि इनमें गुरूओं का अहंकार है और वो भी अहंकार का प्रदर्शन करते हैं कि उन्होंने पैसा बनाया हुआ है तो वो रोल्ज रायस रख लें । प्रेम को नहीं सोचते । खासकर अमेरिका में हर चीज पैसे पर चलती है । जो लोग रूपए के पीछे भागते हैं वो परमात्मा के प्रेम को समझ नहीं सकते । पर रूपये वाला सारी रात नहीं सो सकता उसे चैन नहीं । उसके बच्चे वगैरह खराब जाते हैं । पैसा तो है पर उनका दिमाग ठिकाने से नहीं । जब तक मनुष्य धर्म में खड़ा नहीं है उसको पैसे का बोझा उठाना आएगा ही नहीं । मनुष्य को निर्वाज्य प्रेम करना चाहिए और ये सोचना चाहिए कि परमात्मा ने गर मुझे रूपया दिया है तो मैं इसका क्या करूं जिससे मुझे लाभ हो । असल लाभ हो । मैं ऐसा कौन सा काम करूं जिससे मुझे पुण्य मिलेगा । पर पैसा भगवान के दरबार में नहीं चलता । परमात्मा को पैसा समझ नहीं आता । पैसा इनंसान ने बनाया है । पैसे के वजह से मनुष्य धर्म को छोड़े हुए है और हर तरह की ऐसी क्रियाएं करता है जो मनुष्य को लज्जित कर दे । ऐसे आदमी का भी मान बहुत थोड़े दिन के लिए है । सब लोग उसकी पीठ के पीछे बुराई करते हैं । मनुष्य उसी की इज्जत करेगा जिसमें असलीयत में प्यार है, धर्म है । जैसे एक पीर के मजार पर अकबर बादशाह के जमाने से अभी तक दीया जल रहा है । आज भी संसार में आप उन्हीं लोगों के नाम सुनते हैं जिन्होंने इस तरह का जीवन बिताया जो बाहर से अन्दर से हर तरह स्वच्छ, सुन्दर, निर्मल स्वरूप था ।

हमारी इच्छा होनी चाहिए कि हम निर्मल हो जाएं । क्योंकि परमात्मा का प्रेम अत्यन्त स्वच्छ, और निर्मल है । और सत्य में अगर आप खड़े हैं, कोई सी भी सत्य बात आपने अगर कह दी, तो परमात्मा, उस सत्य का बड़ा भारी आधार, उसको अपने हाथों हाथ उठाएगा । उसको बचा लेगा । जब हिटलर आया तो वो एक सबक बन गया कि कोई हिटलर न बने । जो हिटलर बनने की कोशिश करेगा उसका वही हाल होगा जो हिटलर का हुआ था । अब जर्मनी के लोग इतने शान्त और कोमल हो गए । उनका स्वभाव इतना अच्छा हो गया कि हमारे सहजयोग में सबसे ज्यादा बढ़िया लोग हैं जर्मन । सद्दाम का उपर आना, हारना और इस तरह से मुंहकी खाना ये भी परमात्मा का काम है । इससे लोग समझ लेंगे कि जो धर्मान्धता है, जो धर्मान्माद में उतरना है कितनी गलत चीज है । ये अन्धापन हमें छोड़ देना चाहिए । इसमें दोष मनुष्य का है क्योंकि मनुष्य ने सबको बड़े अच्छे से कूड़ा बना दिया संगठित कर दिया । जो जीविन्त क्रिया में विश्वास रखते हैं तो हमारा संगठन प्रेम का है । प्रेम से सब चीज होती है । वोही जब सम्भालने वाले एक बैठे हैं तो हम क्यूं कुछ करें । उनके लोग दौड़ रहे हैं चारों तरफ और अब आप लोग भी खड़े हो गए । आपकी भी मदद कर रहे हैं, आपको भी सहायता दे रहे हैं । आनन्द दे रहें हैं । समझा रहे हैं । बस निश्चित हो जाएं आप । एक कार्य उस प्रेम का ये है कि ये आपको सही रास्ते पर लाकर छोड़ देता है । जो नहीं आया वो रह गया । रजनीश के पास 25 रोल्ज रॉयस थे। जब वो मर गया तो आधे घण्टे में उसे सबसे नजदीक शमशान में फटा फट जला दिया । क्या इज्जत मिली ? ऐसे ही सब गुरू घण्टालों का होने वाला है जैसे हिटलर का, मुसोलिनी का हुआ । सब का यही होने वाला है क्योंकि इसमें परमात्मा का हाथ है । और ये हमारे लिए एक मार्ग दर्शक है कि ये

करने से क्या हो गया । उनके रास्ते पर हमें नही जाना है । हमें कौन से रास्ते पर चलना है ? उस रास्ते से कि जब हमारी मृत्यु भी हो तो भी शरीर से हमारा सुगन्ध आए । मजार पे हमारे हमेशा रोशनी रहे । लोग आके वहां सर टेके । ये सिर्फ प्यार से हो सकता है । और उस प्यार में किसी तरह का स्वार्थ नहीं । किसी तरह छोटेपन की बात नहीं । किसी तरह की खिचाव नहीं । अब कहने से कि तुम मोह छोड़ दो । मोह छूटने वाला नहीं । कहने से कि तुम माया छोड़ दो, माया छूटने वाला नहीं । कहने से अगर होता तो सब सर पीट पीटकर चले गए । रोज पढ़ते हैं गीता वगैरह पर कुछ असर नहीं आता । जैसे थे वैसे ही हैं । ये होगा तभी जब आप आत्म - साक्षात्कार लेंगे । किताबों में लिखा हुआ सत्य सिर्फ आत्मा के प्रकाश में ही अन्दर उतर सकता है । उसके बगैर होता नहीं । पर आपके अन्दर जो शक्ति जागृत होती है वो प्रेम की शक्ति है । जो मनुष्य सहजयोग में जाकर के भी प्रेम करना नहीं जानता वो सहजयोगी नहीं । प्रेम एक क्षमा की शक्ति है । सहजयोगियों का पहला लक्षण है कि वो प्रेम मय होते हैं । सबके प्रति एक चित्त एक जानकारी होती है । जैसे हम बजार गये तो हर चीज दूसरों की पसन्द कीभावना से खरीदी जाती है । ये जो संसारिक चीजें हैं ये सिर्फ इसलिए हैं कि इनसे अपना प्यार जता सकें । आखिर छोटी - छोटी चीजों में कैसे प्यार जताया जाता है ? ये श्री राम ने भीलिनी के बेर खाकर दिखा दिया । श्री कृष्ण भी दासी पुत्र विदुर के घर जाके खाना खाते थे । लेकिन दुर्योधन का मेवा नहीं खाते थे । ये एक सहज योगी का लक्षण है कि प्रेम का आदर करना ही सत्य का आदर करना है । जब मनुष्य प्रेम करता है तो वो धीरे धीरे निर्मल होता जाता है । उसके अन्दर की सारी मोह, लोभ आदि एक दम से नष्ट हो जाती है । किसी आदमी को मोह होता है क्योंकि उसके अन्दर निर्व्याज्य प्रेम नहीं । मद होता है वो अपने को सोचता है कि मैं बड़ा आदमी हो गया हूं । ऐसा सोचने वाला तो पागल होता है । पर जिसको प्यार हो जाता है वो कैसे सोच सकता है कि मैं इनसे कोई बड़ा आदमी हो गया हूं । लेकिन प्यार में हर एक आदमी की बारीकी मालूम रहती है । उसकी चाहत मालूम रहती है । क्या चीज उसको खुश करती है । जब ये परमेश्वरी प्यार आपके अन्दर से बहने लगता है तो सब चीज के बारे में ऐसा कुछ ज्ञान आ जाता है कि जैसे हजारों वर्ष से तुम इन लोगों को जानते हो । जब आप अपने आत्मा में उस प्यार को पाकर तृप्त हो जाएं तभी ये हो सकता है । तो सारी तृप्ती ही उस प्यार में है । मानव स्थिति में ये होता है कि जो सबसे बुरी चीज होगी वो लाएंगे उपहार में सबसे बढ़िया अपने लिए, सब से सस्ती दूसरों को लेकिन जब सहजयोगी अपने आत्मा के आसन पर स्थित होता है तो राजा हो जाता है, और छोटी - छोटी चीजों के लिए रोना खत्म हो जाता है । और आत्मा के आनन्द में, उसके प्रेम में विभोर हो जाता है । और यही प्रेम हमें आनन्द देता है । चारों तरफ से बरसता रहता है । तो दुखी होने की कोई बात ही नहीं । जब वो परमात्मा हमें प्यार करता है इसका पूर्ण विश्वास हो जाता है । तब कोई चिन्ता नहीं, कोई परेशानी नहीं, सब सामने चीजें चली आ रही हैं । काम होते जाएगा, आप हैरान हो जाएंगे कि ये सब हुआ कैसे । मैंने तो भगवान से कहा भी नहीं, माँगा भी नहीं । मेरे मन में इच्छा तक नहीं हुई और उससे पहले परमात्मा ने बात पूरी कर दी । और बाद में ये समझ में आएगा कि इस वक्त मुझे इस चीज की जरूरत थी और मेरे ख्याल में आई नहीं, पर उनके ख्याल में आ गई । इतनी बारीक - बारीक चीजों को वो जानते कैसे हैं ? उनके प्यार के कण(अणु)चैतन्य बनकर चारों तरफ छाए

हुए हैं । जो हर चीज़ को जानते हैं, सोचते हैं, और समझते हैं और परमात्मा के प्यार की समझ के अनुसार कार्य करते हैं । परमात्मा ने अपने प्यार की ये सृष्टि चारों तरफ रची हुई है । इसे हम परम - चैतन्य कहते हैं । इसे ऋतम्भरा-प्रज्ञा भी कहा है । जिस शक्ति के कारण सारे ऋतु बदलते हैं । प्रज्ञा - प्र माने प्रकाशित, चेतित, ज्ञ माने ज्ञान । ये जो सारे रंग बिरंगे फूल खिलते हैं, ये नजारे, आकाश में बादल बदल रहे हैं उसमें इन्द्रधनुषी रंग चल रहे हैं, एक से एक मनोरम दृष्य रोज दिखाई देते है । इन्सान के प्यार की जो बड़ी मनोरम छटाएं रोज दिखाई देती हैं उन्हें देखकर बड़ा सुहावना सा समय चारों ओर घटित होता है । वो ऋतम्भरा-प्रज्ञा, है वही ये परम चैतन्य है । ये कौन सी शक्ति है जो ऋतु बदलती हैं ? कभी आकाश में बादल मंडराते हैं । कभी संसार में फूल ही छा जाते हैं, और कभी गर्मियां । ऐसा दिखाई देती है आकाश में जैसे कि कोई बड़ा चित्त सा बन रहा है जबकि सारे पत्ते झड़ जाते हैं । अगर ये पत्ते न झडें तो इस पृथ्वी तत्व को नाइट्रोजन कैसे मिले ? इसलिए और सूर्य की किरणे पहुंचने के लिए पतझड़ होना ही चाहिए । सब चीज के लिए ये सृष्ट समर्पित है । जंगल के सब जानवर भी कायदे में रहते हैं । जहां शेर बैठा हो वहां एक चिड़िया भी नही बोलेगी । शेर भी रोज़ किसी जानवर को नही मारता । 15 दिन या एक महीने में एक जानवर मारता है । शेर पहले खाता है फिर कायदे से शेर के बच्चे खायेंगे, फिर एक के बाद एक सभी जानवर खाते हैं । आखिर में कौआ फिर चील । जंगल में आईये आपको कही बदबू नहीं आयेगी । लेकिन चार इन्सान आप जंगल में छोड़ दीजिए पता चल जाएगा कि इनसान नाम का जानवर घूम गया है यहां से । सो सारी सृष्टि इस परमात्मा के पाश में है, आराम से चल रही है । पर इसीलिए ज्ञान नही है क्योंकि वो पाश में है । इस ज्ञान प्राप्ति के बाद आपको सारी स्वतन्त्रता है । स्वतंत्रता इसलिए दी गई क्योंकि बड़ी स्वतंत्रता आपको मिलने वाली है उसे आप जान सकें । सुख की संवेदना और आराम जैसे कि कोई माँ की आँचल में छिपा हुआ हो । इसी तरह हर समय लगता है । जानकारी के बाद समर्पण होता है । और ऐसा समर्पण उस दशा में पहुंचा देता है जिसे हम कहते हैं प्रेम-मय होना ।

कशिश भी एक चीज़ ऐसी है जो उस प्यार को बांधती जाती है । उस कशिश में आदमी प्यार को ज्यादा महसूस करता है । जैसे कि कही दर्द हो जाए और उसपे कही कोई हाथ फेरे और उससे आराम हो जाए । उस आराम को हम ज्यादा याद करते हैं बनिस्बत कोई ऐसे ही हाथ फेर दे । कशिश मनुष्य को बड़ी गहराई में उतार पाती है । और इसलिए जिन्होंने परमात्मा को याद किया, उसकी भक्ती रही, कशिश रही, उसको खोजते रहा । आप किसी भी रास्ते पर चलें । कोई भी गलती करें इससे कोई फर्क पड़ने वाला नही क्योंकि वो प्रेम का सागर हैं । वो आपको जरूर अपने हृदय में स्थान देंगे । अपनी तरफ खीच लेंगे क्योंकि वो भी प्रेम का आदर करते हैं । इसलिए आज से आप जान लीजिए कि सहज योग में सर्व प्रथम प्रेम करना सीखो एक दूसरे से । अगर कोई मुझे ऐसा कह देता है कि ये आदमी ठीक नही, वो आदमी ठीक नही तो तकलीफ सी हो जाती है । लेकिन कोई किसी सहज योगी की तारीफ करता है, तो मेरा हृदय आनन्दित हो उठता है । दूसरों के दोष नही देखना चाहिए । दूसरों के गुण देखने से ही हमारे अन्दर गुण आयेंगे । जैसे हम दूसरों के दोष देखेंगे ऐसे ही उनके दोष सीधे हमारे अन्दर आ जायेंगे । जब लोग मुझसे किसी की शिकायत करते हैं तो मैं कह देती हूं कि वे तो आपकी बड़ी तारीफ कर रहे थे । और फिर देखो तो दोनों एक दूसरे के गले लग रहे हैं । तो अपनी समझ में

प्यार को भर दो, अपनी दृष्टि में प्यार को भर दो । अपने जीवन में प्यार भर दो । किसी को प्यार करना भी बहुत बड़ी शक्तिशाली चीज है । और ये शक्ति जो है ये अन्दर से आती है । इस प्यार की जो अनन्त आशीर्वादित शक्तियां हैं उसको आप समझ नहीं पायेंगे । किसी के साथ भी आप प्रेम से यदि कुछ करें तो उसको भूल जायें । अगर याद रखेंगे तो परेशानी हो सकती है । प्यार करने का मजा उठा लीजिए । किसी मतलब के लिए नहीं । सिर्फ प्यार के लिए प्यार हो वही परमेश्वरी प्यार है । आज जो प्यार की बात कही है वो धन्य है । और हृदय से सबको ये प्यार बांटें जिससे सारी दुनियां जान ले कि सहजयोगी जो हैं ये प्रेम योगी हैं । प्रेम में बैठे हुए हैं । अत्यन्त मधुर हैं ।

परमात्मा आप सबको आशीर्वाद दें ।

--

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी
की
जन्म - दिवस पूजा

दिल्ली - 10.3.1991

आज आप लोगों ने मेरा जन्म दिवस मनाने की इच्छा प्रकट की थी । अब मेरे कम से कम चार या पांच जन्म दिवस मनाने वाले हैं लोग । जितने जन्म - दिवस मनाइएगा उतने साल बढ़ते जाएंगे उम्र के । लेकिन आपकी इच्छा को मैंने मान लिया कि इसमें आपको आनन्द मिलता है । तो ठीक है । लेकिन ऐसे दिवस हमेशा आते हैं । उसमें कोई एक नई चीज़ हमारे जीवन में होनी चाहिए क्योंकि हम सहज योगी हैं, प्रगतिशील हैं और हमेशा एक नई सीढ़ी पर चढ़ने का यह बड़ा अच्छा मौका है । सहजयोग में जो आज स्थिति है वो बहुत अच्छी है । जब भी हम देश की हालत देखते हैं तो लगता है कि सहजयोग एक स्वर्ग हमने हिन्दुस्तान में खड़ा कर दिया है । और सहजयोग की हमारी जो साधना है, इसमें जो हम समाये हुए हैं, इसका जो हम आनन्द उठा रहे हैं, ये एक स्थिति पर पहुंच गया है और इसका आधार बहुत बड़ा है । इसका आधार है कि आपने अपनी शुद्धता को प्राप्त किया, अपनी शांति को प्राप्त किया और अपने आनन्द को प्राप्त किया । ये आपकी विशेष स्थिति है जो औरों में नहीं पाई जाती । इसको देखकर सब लोग समझ गए हैं कि ये कोई विशेष लोग हैं और इन्होंने कुछ विशेष प्राप्त किया है । मैं जहां भी जाती हूं लोग मुझे बताते हैं कि हम एक सहज योगी को जानते हैं, वो बहुत नेक तथा बढ़िया आदमी हैं, उसका जीवन एकदम परिवर्तित हो गया है । उन्होंने अपने को सहजयोग के प्रति पूर्णतया समर्पित कर दिया है और उनका सारा कारोबार अच्छी तरह चलता है । उनका कुटुम्ब भी बहुत सुखी है, सब तरह से वे एक आनन्दमय वातावरण में रहते हैं । ऐसा मुझसे लोग कहते हैं और फिर कहते हैं मां हमें भी बताओ । मैं कहती हूं आओ आप हमारे मंदिर में आओ, लोगों से मिलो, उनसे बात चीत करो । आप सब लोगों ने भी सहजयोग को इस तरह से अपनाया है और बढ़ाया है कि कमाल की चीज है । हमें एक बात जान लेनी चाहिए कि हमारे पास जो विशेष शक्तियां हैं वो किसी के पास भी नहीं आई । आज तक कोई भी कुण्डलिनी का जागरण इतनी आसानी से नहीं कर सकता था । कोई भी चक्रों का निदान नहीं लगा सकता था । ये किसी को मालूम ही नहीं था कि चक्रों का निदान आप अंगुलिओं पर जान सकते हैं । किसी शास्त्र में ये नहीं लिखा । किसी ऋषि - मुनी ने यह बात नहीं बताई कि आप अंगुलिओं पर चक्रों का निदान बता सकते हैं । चक्रों पर बात की है, सहस्रार पर भी बहुत कम लोगों ने बात की है । आप लोग इतने सूक्ष्म ज्ञान को इतनी आसानी से प्राप्त कर गए क्योंकि आपने इस पर बहुत ध्यान दिया । और आत्मा के प्रकाश में इस सूक्ष्म ज्ञान को आपने प्राप्त कर लिया । अब आप सहजयोग बना रहे हैं और सहजयोग के जो नियम हैं उनमें आप बहुत सहजता से आ गए हैं । किसी को मैंने इसमें रुकावट करते हुए देखा नहीं, किसी ने मुझसे वाद - विवाद नहीं किया और आसानी

से सब बातों को मान गए । जैसे कि मैंने कहा कि हम बाह्य के जाति, धर्म, भेद आदि को नही मानते । अभेद को मानते हैं । हम सब एक परमात्मा के अंश हैं और उस अंश को, उस विराट स्वरूप को जानना चाहिए । उसमें जागृत होना चाहिए । ये जो बाह्य में विकृतियां आ गई हैं इनको छोड़ करके अन्तरतम में हमें अपनी एकता जाननी चाहिए । धीरे - धीरे मैं देखती हूं कि सब लोगों में इसका आनन्द आने लग गया । यही आनन्द है जो आपको यहां खींच कर लाता है और हर बार आप चाहते हैं कि ये आनन्द हम दूसरों से भी बांट खाएं । जैसे एक शराबी अकेले शराब नही पी सकता उसी प्रकार आप भी अकेले इस आनन्द को नही उठा सकते । तो अगर एक आ दमी सहज योग में आ गया तो उसके सारे रिश्तेदार सहजयोग में आने चाहिएं । सब मिलने वाले, सब दोस्त आने चाहिए और सबको सहजयोग प्राप्त करना चाहिए । तो पहला प्रलोभन तो शारीरिक होता है, शरीर की व्यथा दूर हो गई मानसिक व्यथाएं दूर हो गई, और आपसी रिश्ते ठीक हो गए । आपस में मेल जोल बढ़ गया, बच्चे ठीक से चलने लग गए, हर तरह की आपकी प्रगति हो गई, यहां तक कि लक्ष्मी जी की भी कृपा हो गई । हर पल, हर घड़ी आप देखते हैं कि आप परमात्मा के साम्राज्य में हैं और परमात्मा आपकी मदद कर रहे हैं । इतने चमत्कार हो गए सहजयोग में कि उनको लिखकर निकाल ने की किसी की हिम्मत नही होती । कहते हैं मां पहले आप इसे छान लो, जो लिखने वाला हो वही लिखें नही तो न जाने कितने ग्रंथ हो जाएंगे । सामाजिक स्तर पे हम लोगों ने बहुत उन्नति की है । और धर्म में भी हम जम गये हैं । देखिए हममें सच्चाई आ गई है, हम लोग प्यार को मानते हैं और उस पर चलते हैं । कुछ बोलते नहीं लेकिन हमारे जीवन में ये सच्चाई आ गई है । ये बहुत बड़ी बात है । आपस में, मैंने देखा है, कि सहजयोग में कोई पैसा वैसा नही खाता । सहजयोग के लिए कुछ रूपया पैसा दीजिए तो कोई उसे नही खाता । बहुत लोग कहते हैं कि मां ये भगवान से डरते हैं इस लिए पैसा - वैसा नही खाते । किन्तु मैं सोचती हूं कि सहजयोग में एक तरह का समर्थ बनना अपने आप घटित होता है । समर्थ - सम माने आप अपने साथ अर्थ बनना - आप में जो दस धर्म बसे हुए हैं वो जागरूक हो जाते हैं, और मनुष्य समर्थ हो जाता है । उसको अपने गुण अच्छे लगने लग जाते हैं । उसी में उसे मजा आता है और दुर्गुण से वो भागता है । दुर्गुणी व्यक्ति से या तो भागता है या शान्तिपूर्वक कोशिश करता है कि इसके दुर्गुण भाग जाएं । दुर्गुण निकालने के तौर तरीके भी उसे मालूम हैं, उसे वो इस्तमाल करता है और बहुत बार यशस्वी हो जाता है उसमें यश पा लेता है ।

इसी प्रकार आपने देखा है कि कला में सहजयोग ने बहुत कुछ कार्य किया है । बहुत से कलाकारों में एक नया आयाम आ गया है, एक नई दिशा आ गई है । यही नही, विदेशों में भी मैंने देखा है कि कलाकार बहुत सी नई - नई बातें सोचने लगे हैं । बहुत से आर्टिस्ट, पेंटर म्यूजिशयन, सबमें एक नया उत्साह, एक नई धारणा, एक नया विचार प्रगठित हो गया है । समाज के भी बहुत से प्रश्न हल हो गए हैं । आप लोगों के जो छोटे - छोटे प्रश्न थे वो भी हल हो गए । जो छोटी तबीयत वाले लोग थे वो ठीक हो गए और जो गर्म मिजाज थे वो भी ठीक हो गए, जो बहुत ही ठंडे थे वो भी उठ खड़े हुए । अब ये सारी सेना तैयार हो गई । एक विशेष प्रकार की सेना है । किसी देश में नही, आप तो जानते हैं (ऐसा कहते हैं) कि सहजयोग छप्पन देशों में चल रहा है । मैं कहती हूं तीस देशों में बहुत ही

कार्यान्वित है । बहुत कार्य हो रहा है । और सहजयोग बढ़ रहा है । सहजयोग को बढ़ाना भी बहुत बड़ी चीज है । जो लोग सहजयोग को बढ़ाते हैं वो बहुत बड़ा परमात्मा का कार्य कर रहे हैं । वो आप संगीत के द्वारा बढ़ायें, कला के द्वारा बढ़ायें या भाषणों के द्वारा बढ़ायें । इस तरह से भी यह बढ़ सकता है । आप सहज योग बढ़ा रहे हैं । वैज्ञानिक तौर पर भी, जैसे अमेरिका के विज्ञान के लोग हैं उन्होंने बहुत बातों पर लिखने का सोचा हुआ है । बहुत से डॉक्टरों ने बहुत कुछ यहां कार्य किया है । अपने ऊपर जिम्मेवारी ले करके, कठिन परीश्रम से यह स्थापित कर दिया है कि सहजयोग एक वास्तविक सत्य है । जब मैं संसार में आई और जब मैंने दुनियां की तरफ नजर की तो मैं सोचती थी कि इस अन्धेरे में मेरी यह छोटी सी रोशनी क्या काम कर पाएगी ? कोई देख भी नही पाएगा । किसी से इसके बारे में कहने की बात तो छोड़िये इसके बारे में विचार भी करने के लिए मैं सोचती थी कि क्या फायदा । ये तो लोग इतने अन्धकार में हैं, अज्ञान में हैं । जिन्होंने ज्ञान भी इकट्ठा किया था वो सिर्फ बौद्धिक था । किताबें पढ़-पढ़ कर बौद्धिक बातें सीख गए थे । उनके आगे बात करने से कोई विश्वास किसी को नही होता था । कोई सोच भी नही सकता था कि मैं यह परिवर्तन की भाषा कह सकती हूं । लेकिन अब साध्य हो गया और आप जानते हैं कि यह सब कुछ हो गया है ।

आज की शुभ घड़ी पर मैं देख रही हूं कि अपने देश के ये हालात देखते हुए और जिस तरह से सब कुछ हो रहा है, हमको राजकीय क्षेत्र में भी उतरना चाहिए । जब तक हमारे जैसे लोग राजकीय क्षेत्र में नही आएंगे हमारे देश की हालत ठीक नही हो सकती । एक दम सड़ कर ये पता नहीं क्या हो गई है ? इसकी आंच सहजयोगियों के भी आने वाली है । ये नही कि आप लोग बच जाएंगे । हालांकि आपको इससे कोई तकलीफ नही होनी, हालांकि आप इसमें निकल आएगें, फिर भी यदि आपको अपने देशवासियों का ख्याल है और अगर आपको अपने बच्चों का ख्याल है तो बेहतर है कि हम लोग ही समाज के जो कार्य करते रहे हैं उसे राजकीय स्वरूप दें । और राजनीति में उतर के हम सिद्ध कर दें कि जो लोग नेक हैं, धार्मिक हैं, जो सत्य पे चलने वाले लोग हैं, जिनमें लालच नही, ऐसे लोग एक नये तरह का राजकीय राष्ट्र बना सकते हैं । किसी भी देश में जाइए चाहे वो प्रजातन्त्र हो चाहे साम्यवाद हो या कुछ और - डिमोक्रेसी में तो मैंने कोई ऐसा देश नही देखा जहां पर बेईमानी न हो । कही कम कही ज्यादा । अनैतिकता खुले आम बहुत जगह चल रही है । यदि आप कम्यूनिष्ट देशों में जाइये तो - वो तो अब टूट ही गए हैं सारे - वहां पर जो लोगों से जबरदस्ती काम कराया जाता है उससे उनकी स्वतन्त्रता तक चली गई है । इसलिए दोनों तरह से एक तरफ तो सत्ता और दूसरी तरफ पैसा - इन दोनों के पीछे ही सब देशों के लोग भाग रहे हैं । अब हमें अपनी जो सतह है - जिस सतह से हम सब चीज की तरफ देखते हैं - फिर वो अन्तरराष्ट्रीय प्रश्न हो, राष्ट्रीय हो या हमारे छोटे - छोटे कस्बे या गावों का हो जब हम अपनी सतह से उसे देखते हैं तो विश्वस्तता की दृष्टि से, उसकी विशालता की दृष्टि से हम लोग उसे देखते हैं । दूसरे उसकी गहनता से देखते हैं कि उसमें कौन सी खराबियां हैं, और ये खराबियां हम कैसे निकाल सकते हैं । ये खराबियां भी हम लोग बहुत आसानी से निकाल सकते हैं क्योंकि आपके पास बहुत बड़ी शक्तियां हैं, बन्धन के सहारे आप जानते हैं, कि आप बहुत कुछ काम कर सकते हैं और बहुत लोगों को अपने सहजयोग में ला सकते हैं । अभी मुझे एयर फोर्स के बहुत से लोग मिले थे, वो कहने लगे कि माँ हमें भी ले लीजिए । हम जानते हैं कुछ सहज योग के लोगों को जो एयर

फोर्स में है और उन्होंने बहुत कमाल कर दिया है । फिर कुछ पुलिस वाले है वो भी हमारे साथ चल पड़े हैं । महाराष्ट्र में 'पुलिस टाइम्स' सहजयोग के बारे में सभी कुछ छापता है । इसी प्रकार कुछ अखबार वाले भी हमारे साथ मिल गए हैं और बहुत सरकारी नौकर भी सहजयोग में आ गए हैं । जब उनकी बदली हो जाती है तो सहज योग फैलाते हैं, इसी प्रकार यदि हम राजनीति में उतर जाएं तो राजकीय समस्याओं का हल भी हम निकाल सकते हैं । इसको सबसे पहले हमें जानना चाहिए कि इस मामले में हमारी जो कुछ भी इच्छा हो वो साफ सुथरी होनी चाहिए । उसमें शुद्धता होनी चाहिए । हम सिर्फ देश के हालात ठीक करना चाहते है और लोगों तक उनके अधिकार पहुंचाना चाहते हैं । इतना ही नही उनके अन्दर धर्म जागृत करना चाहते हैं जिससे कि हमारा देश बहुत सुचारू रूप से तथा सुन्दरता से आगे बढ़े और सारे संसार के लिए एक आदर्श बन जाय ।

इस देश में अनेक शक्तियां हैं, बहुत ही ज्यादा अध्यात्मिक देश है । अध्यात्म की शक्ति को, कोई माने न माने, आप तो जानते ही हैं । इस देश की शक्तियों को अच्छी तरह से हम अपने इस्तमाल में ला सकते हैं । इसमें एक बात और हमें याद रखनी चाहिए कि हमें भारतीय संस्कृति में उतरना चाहिए । विदेशी संस्कृति में अगर हम लोग जाने लग जाएं तो विदेश की जो खराबियां हैं वो हमारे अन्दर आ जाएंगी । भारतीय संस्कृति का जो शुद्ध स्वरूप है वो आत्म साक्षात्कार के लिए बहुत पोषक है । अगर हम भारतीय संस्कृति में नही आएंगे तो कभी भी इस देश का हाल ठीक नही हो सकता । ये तो ऐसा है, जैसे मैं सदा कहती हूं, कि आम का पेड़ यदि आप विदेश में लगाइए तो उसमें न आम आएंगे न सेब । इसलिए जो आदमी भारतीय है उसे भारतीय संस्कृति में ही आना चाहिए । और परदेश में जितने भी सहजयोगी है, आश्चर्य की बात है, हमेशा कहते हैं कि मां हमें भारतीय संस्कृति में आप उतारिए । तो ये बहुत सौम्य संस्कृति है । इसमें सब बच्चे, लोग, अत्यन्त सौम्य है, सहन शील है । इतना ही नही धार्मिक हैं । तो जो शुद्ध स्वरूप भारतीय संस्कृति का है उसको हमें बनाना है ओर उस पर विचार करना है । हमारे घर में भी वो संस्कृति आनी चाहिए । बहुत से लोग मुसलमानों द्वारा हम पर लादी गई पर्दा प्रथा आदि को भारतीय संस्कृति मानते हैं । ऐसा बिल्कुल नही है । दक्षिण भारत तथा महाराष्ट्र की औरतें पर्दा आदि कुछ नही करती । वो सब भारतीय संस्कृति से रहती हैं । पर्दा - प्रथा उत्तरीय हिन्दुस्तान में चल पड़ी थी । औरतों को दबाना उनके साथ दुष्ट व्यवहार बिल्कुल भारतीय संस्कृति में नही है । भारतीय संस्कृति में तो, आप जानते ही हैं, बहुत - बहुत विद्वान औरतें हुई हैं । उन्होंने बड़े - बड़े विद्वानों के साथ वाद - विवाद कर बड़ी पंडिताई हासिल की । औरत को अपनी संस्कृति में कभी भी नीचा नही समझा गया । स्त्री तथा पुरूष, दोनों का अपना अपना स्थान माना गया । जब विदेशों के लोग हमारी संस्कृति को ले रहे हैं तो क्या अपने लिए जरूरी नही कि हम भी अपनी संस्कृति को समझे तथा जाने ? बहुत सी बातों में हम सोचते हैं कि उनका अनुकरण करना आसान है । लेकिन वो लोग सोच रहे हैं कि उन्होंने जो भी गलतियां की इसका कारण उन पर किसी तरह के अंकुश का न होना था । एक कटी पतंग की तरह वो लोग मनमानी करते और अति पर चले जाते । तब उन्हें पता लगता कि गलतियों के कारण कई बिमारियां हो गई, सारा उनका समाज नष्ट भ्रष्ट हो गया ।

हमारी संस्कृति की नैतिकता हमारा अंकुश है । नैतिकता को हमें समझ लेना चाहिए । और वो जब तक हमारे अन्दर पूरी तरह उतरेगी नहीं हम लोग असली तरह से सहज योगी भी नहीं हो सकते । क्योंकि यह सहजयोग के लिए बहुत पोषक है । मैं इसलिए नहीं कह रही कि मेरा जन्म हिन्दुस्तान में हुआ है और मैं हिन्दुस्तानी हूं । बाहर की अच्छी चीजें भी सीखनी चाहिए । लेकिन भारतीय संस्कृति को यदि आप अपना ले तो वो सब अपने आप ही आ जाएंगी । उनके बनाये कायदे कानून तथा अनुशासन ही उनसे सीखने की चीज है । वो भी अपने आप आ जायगा क्योंकि भारतीय संस्कृति सब चीज में असर करती है, सब चीज को वो ठीक करती है । जीवन के जितने प्रांगण हैं, जितने भी आयाम हैं, सबमें वो एक दैवी प्रकृति को प्रस्थापित करती है । यह दैवी प्रकृति को प्रस्थापित करने की बात और किसी भी संस्कृति में नहीं है । इसलिए हमें भारतीय संस्कृति को स्वीकार करना चाहिए और उसमें अपने को बहुत महत्वपूर्ण समझना चाहिए कि हम लोग भारतीय संस्कृति में उतर गये । मैं गांधी जी के साथ सात साल की उम्र से थी, उन्हें देखती थी । उन्होंने धर्म पे बहुत बात की लेकिन गांधी जी बहुत कड़क स्वभाव के आदमी थे । सहजयोग ऐसा नहीं है । यहां कोई जबरदस्ती नहीं है । गांधी जी का यह स्वभाव था कि चाहे जो हो जाए सवेरे चार बजे उठना है। अब परदेश के सहजयोगी करते हैं, हम लोगों से बहुत अधिक मेहनत करते हैं । हमारे यहां तो कोई आश्रम ही में नहीं रहना चाहता । कहते हैं माँ और तो कोई नहीं रहना चाहता अब आप ही आश्रम में रहो । आश्रम बनाया तो लोगों को आश्रम ही नहीं अच्छा लगता, घर से ही चिपके रहते हैं । गांधी जी का नियम था कि सवेरे चार बजे उठ कर नहा धो कर प्रार्थना में जाओ । वहां सांप वगैरह सब घूमा करते थे, प्रार्थना में सांप दिखाई पड़ जाते थे । इतने तेज वे चलते थे कि उनके साथ सबको दौड़ना पड़ता था । इतने उनके कायदे कानून थे कि खाने के लिए उबला हुआ खाना और चाहें तो उस पर थोड़ा सा सरसों का तेल आप डाल सकते थे । सभी को ऐसा खाना पड़ता था चाहे वो जवाहर लाल हो या अब्बुल कलाम आजाद । खुद भी वे बड़े भारी अनुशासन में थे, सन्यासी थे । बहुत कड़क उनका स्वभाव था । कोई भी यदि जरा सी गलती कर दे तो सबके सामने उसे लज्जित कर देते थे । उस वक्त इस चीज की बहुत आवश्यकता भी थी । तब के लोगों ने देश को बहुत प्यार किया । मेरे माता पिता ने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया । हम लोग घर छोड़ झोपड़ियों में रहते थे । इतना त्याग, इतनी श्रद्धा देश को आजाद करवाने के लिए थी । आज आजाद हो कर देश का क्या हाल हुआ है । इसी तरह बड़े वीर लोग थे उस समय । इस तरह की भावना यदि हम लोगों में जाग जाए तो हम अपने देश की पूरी तरह से काया पलट कर सकते हैं । इसमें मुझे कोई शंका नहीं है । लेकिन वो त्याग बुद्धि होनी चाहिए और त्याग में बड़ा गर्वित होना चाहिए । इसमें रोने की कोई बात नहीं होनी चाहिए । आज भी देश के प्रति पूर्णतया समर्पित हो कर ही हम देश की राजकीय स्थिति पूरी तरह ठीक कर सकते हैं ।

सहजयोग में आपके कोई प्रारम्भ - आदि जाने की बात नहीं है । कोई कुछ भी करे आपका जीवन बना हुआ है और हर तरह से आपको सुख है । सुख ही सुख है, आनन्द ही आनन्द है । लेकिन सोचना चाहिए कि ये एक तरह का चॉकलेट है जिसको आप खाते हैं । लेकिन इसके अन्दर एक गहन चीज वो है जहां आपको तप करना होगा । जब तक कि तपस्या नहीं होती तब तक आप पूरी तरह से

सहजयोग को प्राप्त नही कर सकते । ये तपस्या वैसी नही जैसे हिमालय पर जाकर कपड़े उतार ठंड में ठिठुरते रहो । ये तपस्या ऐसी है कि मनसा - वाचा - कर्मणा आप को समर्पित होना चाहिए एक बड़े उद्देश्य के लिए, एक बड़ी चीज के लिए । तब फिर अपने आप बहुत सी चीजें घटित हो जाएंगी । आज तक मैंने आपपे किसी चीज का बन्धन नही डाला । किसी चीज की मनाही नही की । सब प्यार की बातें होती रही, एक प्यार ही देती रही, प्यार बढ़ता रहा,सब आपस में मजा - मजा होता रहा । लेकिन आज जब आपने जन्म दिन की बात की है तो एक नया आयाम हमारी जिन्दगी में हो जाय, नये इरादे हो जांय । जिन इरादों पर हम बाद में गर्व करें ऐसे इरादे हम में हो सकते हैं । आप लोग सहजयोगी हैं, आपका हर इरादा पूरा हो जाता है । मेरा तो कोई इरादा ही नही है, मुझे तो कोई इच्छा ही नही है लेकिन आप लोग इच्छा अगर करें तो सब चीज ठीक हो सकती है । हमारे देश की स्थिति के लिए आपको मन से प्रार्थना भी करनी चाहिए और आज पूजा भी करनी चाहिए इसी चीज को सोच के कि हमने अपने देश की स्थिति ठीक करनी है, और हमारे अन्दर वो शक्ति आए जहां हम अपनी छोटी सी जो जिन्दगी है उसका ख्याल करके कम से कम देश की ओर नजर करें, इसके जो हालात हैं उन्हें समझलें और उसमें कार्यान्वित हों ।

आज का दिन आप सबको शुभ हो । आशा है कि मेरे जीते जी मैं वो भी दिन देख सकूं कि जब हमारा देश पूरी तरह से इन सब गंदगियों से आजाद हो जाय, और सहज का झंडा सब तरफ फैल जाए ।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद ।

--

-